केस स्टडी - शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र वीरगुहारी

अनिल सरगर *

टुलटुल बिस्वास **

*ब्लॉक कोऑर्डिनेटर, जशने तालीम, मध्य प्रदेश

**कोऑर्डिनेटर, टीचर एजुकेशन, आउट्रीच एवं ऐड्वकसी, एकलव्य, मध्य प्रदेश

भूमिका

पिछले 3 साल से एकलव्य फाउंडेशन मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले में प्राथमिक शिक्षा में समग्र सुधार के काम में लगा हुआ है। इसके तहत हम शिक्षकों के साथ तो क्षमता-वर्द्धन का काम करते ही हैं, साथ ही सबसे हाशियाकृत समुदाय के बच्चों के साथ सीखने-सिखाने का काम भी करते हैं। इस पहल के तहत यह अनुभव किया गया कि कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे दिखाई देते हैं जिनके सीखने की गति औरों से कुछ अलग है। कभी-कभी तो ऐसे बच्चे कक्षा प्रक्रिया में, खेल व गतिविधियों में सहज भागीदारी करते हैं, परन्तु पढ़ने-लिखने-गणित के काम में वे कहीं अटके हुए दिखाई पड़ते हैं। दूसरी ओर, कुछ बच्चे गतिविधियों के दौरान भी अनमने-से रहते हैं, कुछ अपने में खोए हुए से और इनका भी पढ़ने-लिखने व गणित का काम कुछ धीमी गति से आगे बढ़ता हुआ या कहीं पर अटका हुआ नज़र आता है।

बच्चों के बीच लगातार समय लगाने और शिक्षकों के साथ बातचीत से हमें पता लगा कि अमूमन हर कक्षा में लगभग 4-6 बच्चे तो ऐसे हैं ही जिनके साथ सीखने-सिखाने के काम में शिक्षक कोई खास गति नहीं ला पा रहे हैं। इससे पहले मध्य प्रदेश के छिन्दवाड़ा ज़िले के तामिया ब्लॉक में शासकीय स्कूलों व समुदाय के साथ मिलकर गाँवों में चलाए जा रहे शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों में बच्चों के सीखने के प्रतिफल के अध्ययन से भी हमें यह पता लगा था कि हर कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे हैं जिनकी कक्षा में हाज़िरी तो काफी अच्छी है, परन्तु फिर भी वे शैक्षणिक काम में कहीं अटके हुए हैं। इन बच्चों के साथ लगातार सम्पर्क और जानकारी जुटाने पर हम इस नतीजे पर पहुँचे थे कि सम्भवतः इनमें से कुछ किसी प्रकार के अधिगम अक्षमता (Learning Disability) का सामना कर रहे थे। आगे इस विषय पर पठन सामग्री की तलाश और अधिगम अक्षमता वाले बच्चों की पहचान व उनके साथ काम करने के तरीके को सीखने-समझने की हमारी कोशिश में हमने यह पाया कि भारत में इस विषय पर बहुत ही सीमित काम हुआ है। सेज प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किताब Perspective on Learning Disabilities in India: Current Practices and Prospects में किताब के सम्पादक कहते हैं कि "बच्चों को अक्षम बनाने वाली स्थितियों में से अधिगम अक्षमता वह है जिसकी सबसे अधिक चर्चा होती है, पर जिसकी हमारे पास सबसे कम समझ है। (Learning disabilities (LDs) remain one of the least understood and most debated disabling conditions that affect children.)" मध्य प्रदेश में भी कई विशेषज्ञों से इस बारे में सलाह लेने की कोशिश में हमने पाया कि इस क्षेत्र में ज़मीनी काम का बहुत अभाव है।

अतः, होशंगाबाद ज़िले के हाल के काम में हमने अलग-अलग ब्लॉक में शिक्षकों के साथ अधिगम अक्षमता पर विशेष फोकस के साथ चर्चाएँ करनी शुरु कीं। साथ ही केसला ब्लॉक के वीरगुहारी गाँव में संचालित शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में खास फोकस के साथ यह आज़माकर देखने की कोशिश कि किस तरह शैक्षिक व भावनात्मक प्रयासों से ये बच्चे भी सीखने के सफर में आगे बढ़ सकते हैं।

वीरगुहारी के बारे में

वीरगुहारी गाँव इटारसी से बैतूल जाने वाली मुख्य मार्ग (NH 46) से लगभग 7 किमी की दूरी पर स्थित है। पास के कस्बों में एक तो सुखतवा है, जो 19 किमी दूर दक्षिण दिशा में है । थोड़ा और दक्षिण की ओर जाने पर 29 किमी की दूरी पर आगे विकासखंड मुख्यालय केसला पड़ता है। छोटे से गाँव की कुल जनसंख्या 203 है। कुल घरों की संख्या 53 हैं जिसमें से 50 घर आदिवासी समाज के और 3 घर हरिजन समाज के हैं। आदिवासी समाज में भी कोरकू समाज के घर ज़्यादा हैं और फिर गोंड समाज के।

गाँव के लोगों की आजीविका का साधन खेती, खेत में तथा आसपास के कस्बों में रोड, निर्माण आदि के कामों में मज़दूरी है। तवा नदी गाँव से आधा किमी दूर है। इसलिए गाँव के बहुत से लोग रेत भरने और ढोने (कहार) का काम करने तवा नदी जाते हैं। यह भी आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन है। वीरगुहारी में पहले शिक्षा गारंटी योजना (Education Guarantee Scheme) के तहत शुरु की गई EGS शाला थी जो अब उत्क्रमित प्राथमिक शाला में तब्दील हो गया है। स्कूल में दो शिक्षक पदस्थ हैं। इनमें से एक शिक्षक गाँव से 1 किमी दूर स्थित नयापुरा गाँव से आते हैं और दूसरी शिक्षिका

इटारसी से आना-जाना करती हैं। स्कूल में पिछले सत्र में 28 बच्चे दर्ज थे, अभी वर्तमान में कुल 25 बच्चे दर्ज हैं।

आगे वीरगुहारी प्राथमिक शाला के 3 ऐसे बच्चों के साथ किए गए काम का ब्यौरा केस स्टडी स्वरूप में दिया गया है जिन्हें उनके अभिभावक और शिक्षक पढ़ने में कमज़ोर और अतिरेक शरारती मानते हैं। हमारा अनुमान है कि ये बच्चे विशेष अधिगम अक्षमता का सामना कर रहे हैं।

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र - संक्षिप्त परिचय

एकलव्य द्वारा संचालित शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्रों में प्राथमिक या माध्यमिक शाला के बच्चों के लिए स्कूल समय के अलावा दो घंटे नवाचारी शैक्षणिक अनुभव के मौके दिए जाते हैं। केन्द्र स्कूल में या गाँव में समुदाय द्वारा मुहैया करवाए स्थान पर लगता है। केंद्र में बच्चों के साथ सीखने-सिखाने का काम करने वाले साथी - यानी केन्द्र संचालक - आमतौर पर उसी गाँव के होते हैं और उनके चयन में समुदाय की मुख्य भूमिका रहती है। केन्द्र संचालक या संचालिका 10 वीं पास या उससे ज़्यादा पढ़े होते हैं। केन्द्र संचालकों का शुरू में तथा समय-समय पर उन्मुखीकरण किया जाता है और नियमित तौर पर योजना बनाने और समीक्षा करने के लिए बैठकें भी आयोजित की जाती हैं। पढ़ाने के लिए बच्चों के विकास को और सीखने की प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए रोचक व नवाचारी तरीके अपनाए जाते हैं और कई प्रकार की स्रोत सामग्री भी तैयार की जाती है या उपलब्ध करवाई जाती है। बच्चों को उनकी शैक्षणिक स्तर के अनुसार तीन समूहों में विभाजित किया जाता है – ग्रुप ए में वे बच्चे होते हैं जो कक्षा चौथी व पाँचवी के स्तर की पढ़ने-लिखने व बुनियादी गणित के कौशलों को सीख रहे होते हैं। ग्रुप बी में वे बच्चे आते हैं जो कक्षा तीसरी के स्तर पर काम कर रहे होते हैं। और ग्रुप सी में कक्षा पहली व दूसरी के स्तर पर – यानी बिल्कुल शुरूआती स्तर के भाषा व गणितीय कौशलों पर काम कर रहे बच्चे होते हैं। जैसे-जैसे बच्चों के सीखने में सुधार आता है, वे ग्रुप सी से ग्रुप बी, और ग्रुप बी से ग्रप ए में बढ़ते जाते हैं।

बच्चों के सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया में अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी बढ़ाने के लिए पालकों की नियमित बैठकें आयोजित की जाती हैं ताकि पालक की बच्चों के शिक्षण में रुचि बनी रहे। साथ ही स्कूल के अध्यापकों से संपर्क व फॉलो-अप किया जाता है ताकि वे भी बच्चे की प्रगति में रुचि लें और खुद भी अधिक ध्यान दें।

जैसा कि ऊपर बताया गया, हमने स्कूली कक्षा तथा शिक्षा प्रोत्साहन केंद्र में यह देखा कि कुछ बच्चों में प्रयास के बावजूद प्रगति नहीं दिखती या फिर सीखने में कुछ विशेष समस्या होती है। इस बात को गहराई से समझने के लिए और ऐसे बच्चों के साथ किस तरह से काम किया जाए, इस पर सक्रिय खोजबीन के लिए शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र वीरगुहारी के तीन बच्चों के साथ वर्ष 2019 में सतत काम किया गया। इन 3 बच्चों का चयन केन्द्र संचालिका

प्रमिला और प्राथमिक शाला के प्रधान अध्यापक श्री मनोज खंडेलवार से बातचीत करते हुए उनके आंकलन के आधार पर किया गया है।

चयन के बाद तीनों बच्चों के परिवार से भी संपर्क किया गया ताकि उनकी जन्म-पूर्व, जन्म के समय और जन्म के बाद का ब्यौरा और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को भी समझ पाएँ। गाँव की बसाहट के बारे में भी जानकारी ली गई। मई 2019 से जुलाई 2019 के तीन माह तक हमने इन बच्चों का अवलोकन और उन पर विशेष ध्यान दिया, ताकि उनकी समस्या को समझ सकें और उन्हें सहयोग दिया जा सके। इससे आगे इनके साथ सतत प्रयास केंद्र संचालिका प्रमिला ने जारी रखा।

यह तीन बच्चे हैं कुशल, गोमती और वंदना। तीनों बच्चे प्राथमिक शाला वीरगुहारी में दर्ज हैं। कुशल पाँचवीं में है, गोमती चौथी में और वंदना दूसरी में।

1. कुशल

कुशल कक्षा-5 वीं का छात्र है। यह दो वर्षों से शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में दर्ज है। पहले वर्ष में केन्द्र नवम्बर 2017 से अक्टूबर 2018 तक कुल **231** दिन लगा और कुशल **105** दिन उपस्थित रहा यानी कि 45 प्रतिशत समय। दूसरे वर्ष केन्द्र नवम्बर 2018 से अप्रैल 2019 तक कुल **127** दिन लगा है और कुशल कुल **38** दिन उपस्थित रहा यानी कि केवल 30 प्रतिशत समय।

कुशल का परिवार आदिवासी है और माता-पिता मज़दूरी और कुछ खेती करते हैं। उनके पास केवल दो एकड़ ज़मीन है।

परिवार की जानकारी इस प्रकार है।

क्र	नाम	कुशल से संबंध	शैक्षणिक योग्यता	उम्र
1	भगवानदास	पिता	निरक्षर	लगभग 35 वर्ष
2	लक्ष्मी	माँ	निरक्षर	लगभग 30 वर्ष
3	कुशल	स्वयं	5 वी अध्यनरत	11 वर्ष
4	वैशाली	बहन	पहली अध्यनरत	5 वर्ष
5	वंश	भाई	ऑगनवाड़ी	3 वर्ष

केन्द्र संचालिका-प्रमिला ने कुशल के बारे में बताया कि वह कभी-कभी केन्द्र में आता है। कुछ समय रुककर वापस चला जाता है। रोकने पर भी वह नहीं रुकता है। अपनी मर्ज़ी से आता है, अपनी मर्ज़ी से कुछ समय काम करके चला जाता है। किसी की सुनता नहीं है। घर में बहुत कम रहता है, इधर-उधर घूमता रहता है, घर के लोगों की भी नहीं सुनता। घर के लोग उसे बहुत डाँटते हैं। उसे कोई शारीरिक समस्या नहीं है। कुशल भाषा में छोटे-छोटे शब्द जैसे-नल, जल, घर पढ़ लेता है। गणित में 20 तक की संख्या देखकर लिख लेता है। बिना देखे नहीं लिख पाता। स्कूल के शिक्षक मनोज सर के अनुसार वह एक "उधमी, शरारती और दिमाग से कुछ कमज़ोर" बालक है।

1 मई 2019

आज मेरा पहला दिन था। केन्द्र में 10 बच्चे उपस्थित थे। मैंने सभी बच्चों को गोल घेरे में बैठाने का प्रयास किया। एक कागज उठाकर मैं पट्टी काटने का काम करते रहा। उन अलग-अलग पट्टियों से मैंने झालर बनाने का काम शुरु किया। बच्चों के लिए यह बिल्कुल नया था, उन्हें बहुत मज़ा आ रहा था। मैं कागज को कैंची से काट रहा था। लेकिन कुशल ने कटर से जल्दी-जल्दी कागज काट दिए। मैंने तीन पट्टी काटी जब तक उसने 10-12 पट्टियाँ काट दी। उसके बाद सभी ने झालर बनाने का काम शुरु किया। सभी ने छोटी-छोटी झालर बनाई। छुट्टी के समय मैंने सभी से कहा कि अगले दिन सभी को आना है और अपने-अपने दोस्तों, सहेलियों को भी साथ में लाना है। आज हमने जो झालर बनाई है उसके बारे में भी सभी को बताना है। कल और बनाएँगे और इसे दीवार पर लगाने का काम करेंगे। आज कुशल पुरे समय केन्द्र में उपस्थित रहा। सभी गतिविधियों में शामिल रहा। बीच-बीच में वह एक-दो बार क्रिकेट खेलने स्कूल के मैदान में गया। बाद में आकर अन्य गतिविधियों में भी शामिल होता रहा।

2 मई 2019

आज 14 बच्चे उपस्थित रहे। कुशल आज पूरे समय उपस्थित रहा। सबसे पहले वह झालर बनाने में व्यस्त रहा। झालर बनाने के साथ-साथ उसने अपने मन से कागज काटकर कुछ अन्य चीजें भी बनाईं और दीवार पर लगाया। आज एक घंटे तक सभी बच्चे झालर बनाते रहे। कल की तुलना में आज गति काफी तेज़ थी। उसके बाद सभी बच्चों व संचालक ने मिलकर दीवार पर झालर लगाने का कार्य किया। झालर दो दीवारों के लिए कम पड़ गई तो अगले दिन और बनाने की आपस में चर्चा की गई।

इसके बाद सभी बच्चे रंगोमेट्री से अलग-अलग आकृतियाँ बना रहे थे। कुशल भी आकृतियाँ बनाते रहा। बच्चे जब बाल्टी बॉल खेल रहे थे उस समय वह बाल्टी में कितनी बॉल गई और बाहर कितनी गई यह गिनने का काम कर रहा था। फिर कुछ समय तक वह हनोई टावर से खेलते रहा लेकिन गोल चकरी को जमाने के नियमों के बारे में उसे पता नहीं था। उसे बताने का प्रयास किया लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय उसके दो दोस्त मैदान में क्रिकेट खेल रहे थे। सोचा कि अभी उसका मन नहीं है तो दबाव नहीं बनाना चाहिए। उसी समय वह उठकर क्रिकेट खेलने चला गया।

थोड़ी देर क्रिकेट खेलने के बाद वापस आया और अपने मन से पुराने अखबार के कुछ मनपसंद चित्रों को कटर से काटने लगा। यह देखकर मुझे अच्छा लगा। जब मैंने उससे कहा कि सभी चित्रों को काटकर दीवार पर लगी ब्राउन शीट पर लगाओ तो वह हँसने लगा। उसने लगभग सभी चित्रों को काटकर शीट पर लगाने का कार्य किया। उसे भी बहुत मज़ा आ रहा था।

3 मई 2019

आज की उपस्थिति 14 थी। कुशल समय पर आ गया था और पूरे समय अलग-अलग गतिविधियों में शामिल रहा। मैं जब केन्द्र पहुँचा तो सभी बच्चे झालर बनाने में व्यस्त थे। थोड़ी देर के बाद मैंने सभी से कहा कि अब हम दूसरा काम करते हैं। मेरी बात पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। सब झालर बनाने में लगे रहे। आज और भी ज़्यादा गति थी। सभी ने झालर बनाकर संचालक की मदद से दो खाली दीवारों पर लगाने का काम किया। थोड़ी-थोड़ी बची झालर को छुट्टी के समय बच्चे अपने घर ले गए। झालर लगाने के बाद अलग-अलग बच्चे अलग-अलग काम करने लगे। कुछ बच्चे रंगोमेट्री से आकृति

बना रहे थे तो कुछ छोटी किताबों में रंग भर रहे थे। कुछ गोटी सरकाने वाला खेल खेल रहे थे।

इसके बाद मैंने सभी बच्चों को गोल घेरे में बिठवाया। इस बार सभी बच्चे आसानी से बैठ गए। मैंने कुछ 10-12 शब्द चित्र कार्ड निकाले जिन्हें बच्चे जानते थे और एक-एक करके चित्र व नाम दिखाकर उनसे चर्चा की जैसे-चूहा, बिल्ली, कुत्ता, अंगूर, हिरण, आदि। मेरे सवाल कुछ इस तरह के थे - 'आप लोगों ने इसे देखा है क्या? यह क्या-क्या खाता है? कहाँ रहता है? कौन-कौन से रंगों का होता है? इसकी आवाज़ कैसी होती है? देखने में कैसा लगता है?' चर्चा काफी विस्तार से की गई। बच्चों ने बहुत अच्छे से बताया, आवाज़ निकालकर अभिनय किया। इस गतिविधि में बच्चों को बहुत मज़ा आया।

छुट्टी के समय सभी बच्चों को बताया गया कि अगले तीन दिन छुट्टी है और अब उन्हे मंगलवार को आना है। सभी बच्चे दुखी हो गए। उन्होंने पूछा कि तीन दिन तक केन्द्र क्यों नहीं लगेगा? उन्हें अलग-अलग दिनों के बारे में विस्तार से बताया, ''4 तारीख को हम लोगों की मीटिंग है, 5 तारीख को रविवार है, 6 तारीख को मतदान है।'' यह सुनकर भी वह खुश नहीं थे।

7 मई 2019

तीन दिनों के अवकाश के कारण आज बच्चों की उपस्थिति कम थी - केवल 10 । कुशल पूरे समय केन्द्र में उपस्थित रहा और सभी गतिविधियों में शामिल रहा। मैं जब पहुँचा तो सभी बच्चे केन्द्र संचालक के साथ मिलकर धागे से चित्र बनाने का काम कर रहे थे। यह गतिविधि बच्चों के लिए नयी थी। उन्हे चित्र बनाने में बहुत मज़ा आ रहा था। कुछ बच्चों ने धागे से चित्र बनाकर उसमें रंग भी भरा। सभी बच्चों ने अपने-अपने चित्रों पर अपना-अपना नाम व आज की तारीख दर्ज की। 2-3 बच्चों को नाम लिखना नहीं आ रहा था तो संचालिका ने मदद की। बच्चों व संचालिका ने रस्सी पर यू-पिन से सभी चित्रों को टाँगा।

आज कुशल एक बार अपने दोस्त साहिल के साथ बेडमिंटन वाले बैट से बॉल खेलने गया। 10 मिनिट के बाद वापस आकर गतिविधियों में शामिल रहा। सभी बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर बताया कि उन्हे शाम को मम्मी-पापा के साथ जाकर पलाश (खकरा) के बड़े पत्ते लाकर उसकी पातल (पत्तल) बनाना है। फिर उसी से बड़ा दोना बनाकर कल लाना है। पातल व दोने के बारे में बोर्ड पर बनाकर समझाया। साथ ही अपने-अपने घर से थोड़े-थोड़े बीज जो वे अपने खेत में बोते है, या जो घर पर हैं उन्हें लाना है। छुट्टी के समय मैंने सभी से कहा कि अगले दिन सभी को आना है और अपने-अपने दोस्त, सहेलियों को साथ में लाना है।

8 मई 2019

आज 11 बच्चे उपस्थित थे। सुबह जब मैं पहुँचा तो सभी बच्चे केन्द्र संचालिका के साथ स्कूल के आस-पास से पलाश के पत्ते तोड़कर ला रहे थे। बच्चे घर से दोने बनाकर तो नहीं लाए थे, लेकिन यह बहुत अच्छा लगा कि सभी बच्चे थोड़े-थोड़े बीज ज़रूर लाए थे। फिर मैंने सभी को एक पातल बनाकर और उससे दोना बनाकर बताया। बाद में संचालिका व बच्चों ने मेरे से अच्छे आठ दोने बनाए।

इसके बाद सभी बच्चे स्कूल के पास से बाल्टी में मिट्टी लेकर आए। मिट्टी को बारीक करके दोने में पन्नी बिछाई (पन्नी इसलिए की पानी बाहर न निकले) और उसमें मिट्टी भरी। स्कूल का हैंडपंप खराब होने के कारण आँगनवाड़ी के हैंडपंप से बाल्टी में पानी लाए और दोने में डाला। सभी बच्चे मक्का, चना, गेहूँ, बल्लर, मिर्च के बीज लेकर आए थे। मैंने एक दोने में बीज बोने का तरीका बताया। उसके बाद बच्चों ने स्वयं ने यह काम किया। पूरी प्रक्रिया करते समय बच्चों में बहुत जोश और उत्साह दिखाई दे रहा था। आज कुशल थोड़ा लेट आया इसलिए पलाश के पत्ते लाने की प्रक्रिया में वह शामिल नहीं रह पाया। लेकिन बाकी सभी गतिविधियों में वह शामिल रहा।

10 मई 2019

आज मैं पहुँचा तो केन्द्र में एक भी बच्चा नहीं था। गाँव में सम्पर्क करने के दौरान पता चला कि कई बच्चे नाना-नानी के यहाँ गए हैं। 3-4 बच्चे शादी में गए हैं। प्रयास करने पर आज 10 बच्चों को साथ लेकर आए। शुक्रवार के दिन स्वयं सहायता समुह की मीटिंग होती है। उसमें महिलाएँ जाती हैं। शायद छोटे बच्चों को सम्भालने के लिए और घर के कामों के कारण बच्चे केन्द्र में नहीं आ पाते या लेट आते हैं। जिन दोनों में बीज बोए थे उसमें सभी बच्चों ने पानी डाला और बहुत ध्यान से देखा कि बीजों का अंकुरण हुआ या नहीं? एक दोने में अंकुरण हुआ लेकिन चूहे या गिलहरी ने उसे खोद दिया था। यह देखकर बच्चे बहुत दुखी हुए।

आज कुशल भी थोड़ा लेट आया। पहले तो लकड़ी से बॉल को मार रहा था। बाद में धागे से चित्र बनाने का काम करते रहा। फिर अपने मन से चित्र बनाया। जब मैंने उससे पूछा कि क्या बनाया तो उसने बताया की अपन लोगों ने जो बीज बोए है, वह बड़े होकर ऐसे दिखेंगे। एक ट्रक बनाया था, उसके बारे में उसने बताया की वह कचरा लेकर जा रहा है। उससे पूछा कि कचरा भरकर ले जाते हुए ट्रक को तुमने कहाँ देखा? तो उसने बताया कि एक बार वह उसके पिताजी के सा्थ इटारसी गया था, वहाँ पर उसने देखा था। धागे से बनाए चित्रों व स्वतंत्र चित्रों पर अपना नाम व तारीख दर्ज करके बच्चों ने उन्हें स्वयं अपनी फाइलों में लगाया।

परसों बच्चों की टीम बनाकर सर्वे किया था कि गाँव में कुल कितने हैंडपंप है? कितने कुएँ है? कितने ट्यूबवेल हैं? कुशल ने बताया कि गाँव में 1 ट्यूबवेल है और सागर ने बताया कि 6 हैंडपंप है। मैंने कुछ और बच्चों से पूछा तो पता चला कि 6 नहीं 7 हैंडपंप हैं। फिर सागर से पूछा तो उसने बताया कि हैंडपंप तो 7 हैं लेकिन एक बहुत दिनों से खराब है। उसमें पानी बिल्कूल भी नहीं आता तो उसका क्या मतलब है। कुएँ वाली टीम के दोनो साथी नहीं आए। इसलिए कुओं की जानकारी का पता नहीं चल पाया। आज कुशल पूरे समय उपस्थित रहा और सभी गतिविधियों में शामिल रहा।

13 मई 2019 को कुशल नहीं आया था।

14 और 15 मई 2019 को केन्द्र बंद था।

16 मई 2019 को भी कुशल केन्द्र में नहीं आया था। उसके घर गए तो वहाँ ताला लगा था। पड़ोसी ने बताया कि परिवार के सभी लोग शादी में तवानगर गए हैं। वापसी का पता नहीं है। आज जब मैं पहुँचा तो सभी बच्चे प्रमिला के साथ बीज बोने वाले दोने में पानी डाल रहे थे। पानी डालने के बाद बच्चे आपस में चर्चा कर रहे थे कि इस बार बरसात में हम स्कूल के सामने मैदान में अलग-अलग पौधे लगाएँगे। किसी ने आम, किसी ने बेर, तो किसी ने जाम के पौधे लगाने के बारे में चर्चा की। इसके बाद सभी बच्चे समूह में बैठकर स्वतंत्र चित्र बना रहे थे। पहले पेन्सिल से चित्र बनाया बाद में मोम कलर से रंग भरा। चित्र बनाते समय उनके गाँव में हुई शादी के बारे में आपस में बात रहे थे।आज प्रमिला और मैं प्राथमिक शाला के प्रधान अध्यापक मनोज खंडेलवार जी को मिलने नयापुरा गए। इधर-उधर की बातें करते हुए पानी, चाय के बाद मैंने उन्हें बताया कि अभी प्रतिदिन दो घंटे हम लोग बच्चों के साथ समय लगा रहे हैं। इस दौरान जो भी गतिविधियाँ हुई हैं बताते हुए व बच्चों की भूमिकाओं/उपलब्धियों के बारे में चर्चा करते हुए मैंने बच्चों के द्वारा किए गए कामों के कुछ फोटो मोबाईल से दिखाए।

सभी बच्चों के बारे में बताते हुए जब कुशल के बारे में चर्चा की तो वे बहुत ध्यान से सुन रहे थे। मैंने बताया कि कुशल अच्छे से काम कर रहा है। उन्होंने कहा, ''यह तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन कुशल तो बहुत शरारती, उधमी बच्चा है। वह थोड़ा दिमाग से कमज़ोर है। हम लोग तो उससे बहुत परेशान हैं। वह तो किसी की भी नहीं सुनता, स्कूल आता है, बस्ता रखके कुछ समय रुकता है। अपनी मर्ज़ी से कुछ करता है उसके बाद इधर-उधर घूमने के लिए चला जाता है। घर में भी नहीं रहता है। मैं तो उसकी हाज़िरी नहीं लगाता। हाज़िरी लगाने के बाद हम लोगों को रिस्क हो जाता है। कभी कुछ हो गया तो हम लोग फसेंगे। मैंने उसके पिताजी से दो तीन बार बात की तो उन्होंने बताया कि वह भी उससे बहुत परेशान हैं। कभी-कभी तो उसके पापा उसे बहुत मारते हैं। उसके पिताजी कह रहे थे कि आप तो उसे 5वीं पास करवा दो। उसके बाद देखते हैं।''

वीरगुहारी का इतिहास

चर्चा में शिक्षक से गाँव के बारे में कुछ पूछा तो उन्होंने बताया कि वीरगुहारी का आधा गाँव पहले प्रूफ रेंज (army proof range - वह जगह जहाँ गोला-बारूद की टेस्टिंग की जाती है) में था और लगभग आधा गाँव बाहर था। गाँव खाली करवाने के लिए मिलेट्री वालों का दबाव था। इस गाँव की बसाहट सन् 1970 के आसपास की है। शुरुआती दौर में इस गाँव से 8-10 परिवार और आसपास के गाँव के लोग आए। उसके बाद भौंरा (पास के बैतूल ज़िले का एक छोटा कस्बा) के आसपास के 6-7 गाँवों के परिवार आकर बसने लगे। उस समय लोग मनमर्ज़ी से ज़मीन का चयन करके रहने लगते थे। यहाँ की ज़मीन अच्छी है। महुए के पेड़ भी बहुत हैं। तवा नदी पास में है, पानी का स्रोत भी है। तो लोगों को लग रहा था कि यह बहुत अच्छा मौका है। लेकिन इसका ज़्यादा फायदा भौंरा के लोगों ने उठाया। इस गाँव का नाम वहाँ भी वीरगुहारी था और अभी भी वीरगुहारी ही है। जनसंख्या के बारे में पूछा तो उन्होंने अंदाज़ से बताया कि वर्तमान में लगभग 55 घर हैं और जनसंख्या 300 के आसपास है। यहाँ पर गोंड, कोरकू, SC समाज के लोग हैं जिसमें कोरकू समाज के लोग ज़्यादा हैं। कोरकू समाज के 35-37 घर हैं, गोंड समाज के 12, और SC समाज के 6-7 घर।

जब पूछा कि यहाँ पर स्कूल कब से है तो खण्डेलवार जी ने बताया, "सन्-1997 में EGS स्कूल से शुरुआत हुई है। मैं उसी समय से हूँ। उस समय बिल्डिंग नहीं थी। मुझे 500 रुपए वेतन मिलता था। मैंने प्रदान संस्था में 10 वर्ष तक काम किया है। वहाँ का काम छोड़कर इस काम में लग गया। शुरुआती दौर में गाँव के भूता पड़ियार (भगत) के घर ज़्यादातर लोगों का आना-जाना होता था और वहाँ पर पर्याप्त जगह थी तो हम उनके घर में स्कूल लगाते थे। स्कूल की यह बिल्डिंग सन् 2004-05 में बनी है। अभी वर्तमान में यहाँ पर दो शिक्षक हैं। मेरे साथी आठनेर ब्लॉक के हैं। कक्षा एक से तीन तक वे देखते हैं और मैं कक्षा 4-5 के बच्चों के साथ काम करता हूँ। डाक, लिखा पढ़ी वाले सारे काम मैं ही करता हूँ। मैंने पढ़ाने के कामों के लिए उन्हें एक दम फ्री रखा है ताकि बच्चों की नींव मज़बूत बन सके।"

चर्चा के अंत में मैंने उनसे निवेदन किया कि समय निकालकर सुबह के समय केन्द्र में ज़रूर आए तो उन्होंने कहा, "मैं बिल्कुल आऊँगा। आप लोगों को मेरी जो भी मदद लगे बताना मैं पूरा सहयोग करूँगा।"

17 मई 2019 आज कुशल केन्द्र में नहीं आया। वह अभी शादी से नहीं लौटा था।

23 मई 2019 आज कुशल नहीं आया था। उसके दोस्तों ने बताया कि वह शादी से तो लौट आया है पर अभी घर में नहीं था।

24 मई 2019

आज मैं पहुँचा तो कुशल उपस्थित था। रंगीन कागजों को काट कर छोटी झालर बनाने में व्यस्त था। इसके बाद वह मन से रंगोमेट्री से घर बना रहा था। उसने दो-तीन बार बनाया लेकिन पूरा होने की स्थिति में हवा चलती तो उसका घर बिखर जाता था। इससे वह बहुत दुखी हो रहा था। उसने कहा कि मेरी तो किस्मत ही खराब है।

आज वह अपने घर से मोटर साइकल का टायर लेकर आया था। उसमें बैठकर शब्द कार्ड से उसने घर बनाया। मैंने उससे पूछा कि टायर के अंदर क्यों बैठे हो? यह क्या बना रहे हो? तो उसने बहुत अच्छे से बताया, '' घर बना रहा हूँ। टायर के अंदर हवा नहीं आएगी इसलिए यहाँ बैठ कर घर बना रहा हूँ।'' मैंने कुशल से पूछा, ''यह क्या है?'' उसने बताया, यह दीवार है, यह छत है, और यह दरवाज़ा है।'' उससे पूछा कि दरवाज़ा क्यों लगाया? तो उसने बताया, ''दरवाज़ा नहीं लगाते तो कुत्ता रोटी खा लेता है। इसलिए दरवाज़ा लगाया है।'' जब पूछा कि छत क्यों बनाई है? उसने कहा, ''अभी धूप के लिए और बारिश में पानी के लिए लगाई है।'' फिर मैंने पूछा कि दीवार क्यों बनाई है? तो उसने बताया, ''दीवार रहने से घर में चोर नहीं आ सकते। अभी 29 तारीख को नानी के घर शादी में जाउँगा तो दरवाज़ा लगाकर जाऊँगा।''

इसके बाद मैंने टायर को बीच में रख दिया और उससे कहा कि वह टायर पर चलकर बताए तो उसने मुझसे कहा, ''यह तो बहुत आसान है और साथ ही पूछा, ''इस पर चलने से क्या होगा?'' मैंने कहा, ''इस पर चलते समय हमें अपना बैलेंस बनाना होता है। उसने चलना शुरु कर दिया। पहले वह तेज़ी से चलने की कोशिश कर रहा था। एक-दो बार वह गिरते-गिरते बचा, उसके बाद उसने धीरे-धीरे चलना शुरु किया तो वह आसानी से चल पा रहा था। बाद में उसने कहा, ''यह तो कठिन काम है।'' उस दिन कुशल पूरे समय तक उपस्थित रहा।

28 मई 2019 आज कुशल नहीं आया। वह घर में मम्मी-पापा के साथ काम कर रहा था।

29 मई 2019 कुशल अपनी नानी के यहाँ शादी में गया है। इसलिए वह आज नहीं आया। वापसी का पता नहीं है। उसके घर ताला लगा हुआ है।

30 मई 2019

आज कुशल आया था। गिनमाला से मोती गिनने का काम किया। इसके बाद पुराने अखबारों के फोटो कैंची से काटने लगा। उन फोटों को फेविकोल से ब्राउन शीट पर चिपका रहा था। इसके बाद वह पानी पीने चला गया। उधर से आया तो मैंने उसे 'मीठे-मीठे गुलगुले' वाली किताब से चित्र दिखाकर उस पर चर्चा की। उससे पढ़वाने का प्रयास किया। वह कोशिश कर रहा था, लेकिन उसने कहा, ''मेरे को नहीं आता।'' यह बोलकर अंदर कमरे में चला गया। बुलाने पर भी नहीं आया। आज उसका मन नहीं लग रहा था। उसे नदी में नहाने जाना था। कुछ बच्चे रंगोंमेट्री से आकृतियाँ बना रहे थे। कुशल ने मुझसे पूछा, ''कल आपने सभी को बिस्किट खिलाए थे। मैं कल नहीं आया था तो आज मेरे लिए लाए हो क्या?'' जब मैंन कहा कि मैं आज बिस्कुट नहीं लाया तो उसने कहा, ''कल मेरे लिए लेकर आना।''

4 जून 2019 आज कुशल नहीं आया क्योंकि उसे शरीर पर बहुत ज़्यादा घमौरी हो गई है।

5 जून 2019

आज मैंने, गोमती, उसकी बड़ी बहन और एक औऱ बच्ची के साथ गाँव में घर-घर जाकर संपर्क किया। संपर्क के दौरान कुशल के घर गए। कुशल ने हमें उसके घर की तरफ जाते देख लिया था। हमारे पहूँचने के पहले ही वह घर से निकलकर स्कूल की तरफ जा रहा था। हम लोगों ने भी उसे देख लिया था। लेकिन मुझे लगा कि उसके घर के पास तक पहूँच गए हैं तो उसके घरवालों से भी मिल ही लेते हैं। हम कुशल के घर पहूँचे तो उसकी माँ कुशल की छोटी भाई बहन को नहला रही थीं। उनसे पूछा कि कुशल के पिता कहाँ है तो उन्होंने बताया कि वे डैम (बाँध) पर काम करने के लिए गए हैं। मैंने पूछा कि कुशल को घमौरी हो गई है क्या? उसकी माँ ने कहा, ''हाँ, उसे बहुत घमौरी हो गई है, बहुत खुजान चल रही है इसलिए वह स्कूल नहीं गया था। अभी आप लोगों को इधर आते देखा तो वह दूसरे रास्ते से स्कूल गया है।'' मैंने उनसे कहा, ''वह केन्द्र में बहुत अच्छा काम कर रहा है। उसे रोज़ भेजा करें। मैं उसके कुछ फोटो आप लोगों को दिखाने के लिए लाया हूँ।'' उन्होंने कहा, ''आज तो मेरे पास बहुत काम है। जब उसके पापा रहेंगे तब ज़रुर दिखाना। वह बोलता रहता है कि हमारे स्कूल में शाहपुर से एक नए सर आ रहे हैं। बहुत मज़ा आ रहा है।''

घर सम्पर्क के बाद जब हम लोग स्कूल पहूँचे तो कुशल वहीं पर था। उसने मुझसे पूछा, ''आज क्या करने वाले हैं।'' तो मैंने उससे कहा, ''आज बीज बोना था लेकिन चाबी नहीं है। इसलिए आज 10-10 के बंडल बनाएँगे।'' उसने कहा, ''रबर नहीं है तो बंडल कैसे बनाएँगे।'' मैंने बताया, ''मैं रबर लेकर आया हूँ।'' तीन-चार बच्चों को छोटी-छोटी लकड़ी लाने के लिए कहा तो सभी लकड़ियाँ लेकर आ गए।

मैंने 10 तीली का एक बंडल बनाकर बताया। बाद में सभी बच्चों ने बहुत सारे बंडल बनाए। बंडल बनाने के बाद मैंने कुशल से कहा कि वह मुझे 20 तीली देदे। कुशल ने मुझे दो बंडल दे दिए। मैंने कहा कि मैंने तो 20 तीली माँगी थी। तो तुरंत कुशल ने कहा कि एक बंडल में 10 है, 20 का मतलब दो बंडल होगा। यदि विश्वास नहीं है तो खोलकर गिन लो। उसका जवाब मुझे बहुत अच्छा लगा।

जब मैंने कहा कि मुझे 32 तीली दो तो उसने तीन बंडल दे दिए लेकिन 2 अलग से देने के बारे में समझ नहीं पाया। कुछ समय बाद मैंने कहा कि 32 का मतलब 10-10 के तीन बंडल और 2 खुली तीली। तब 32 हो जाएँगे। इसके बाद इसी तरह से मैंने 3-4 सवाल और पूछे तो सबसे पहले कुशल ही सही-सही उठाकर दे रहा था।

6 जून 2019 आज कुशल नदी नहाने गया था, इसलिए नहीं आया।

7, 10, 11,12 और **17 जून 2019** कुशल नहीं आया। वह गुल्ली (महुआ के फूल) तोड़ने जंगल गया था।

20 जून 2019

आज 12 बच्चे उपस्थित थे। कुशल भी आया और पूरे समय उपस्थित रहा। मैंने उससे पूछा, ''तुम इतने दिनों से क्यों नहीं आए?'' वह बोला, ''मैं गुल्ली तोड़ने जाता हूँ और फुन्सी (घमोरी) हो गई तो रोज़ नदी में नहाने जाता हूँ।'' मैंने उसे कहा कि केन्द्र में आने के बाद गुल्ली तोड़ने जाया करे। तो उसने हाँ कहा। आज केन्द्र में हो रही गतिविधियों में उसका मन नहीं लग रहा था। वह अकेला एक कमरे में रंगोमेट्री से आकृतियाँ बना रहा था। आज वह ऑयल के डिब्बे और पानी की बॉटल के ढक्कन के चक्के लगाकर एक गाड़ी बनाकर लाया था, जो बहुत अच्छी थी। मैंने उससे कहा कि गाड़ी बहुत अच्छी है और पूछा कि वह किसने बनाई है? तो उसने कहा कि उसने ही बनाई है। मैंने पूछा कि गाड़ी बनाने के लिए उसे किसने मदद की, तो उसने बताया किसी ने नहीं। वह बोला, ''मैं तो ऐसा बनाते रहता हूँ।'' मैंने पूछा, ''तुमने इसमें मिट्टी क्यों भरी है? तो वह बोला, ''मिट्टी भरने से भारी हो गई, बिना मिट्टी के चल नहीं पाती बार-बार पलट जाती है। इसलिए मिट्टी भरी है। मैं आज भी कुछ बनाऊँगा।'' मैंने उसे पहले जो बनाई थी उसे लाने को कहा तो उसने कहा कि वे तो सब तोड़ दी हैं। जो आज बनाएगा वह ले आएगा।

बाकि के बच्चे तीली-बंडल बनाने का काम कर रहे थे। बनाने के बाद प्रमिला संख्या बोल रही थी बच्चे उतनी तीली उठाकर दे रहे थे। कुछ बच्चों को दिक्कत हो रही थी। प्रमिला उनकी मदद कर रही थी। उक्त गतिविधि के बाद सभी बच्चों को पुस्तकालय की किताबें दी गईं। किताबों के चित्रों को देखकर बच्चे आपस में चर्चा कर रहे थे। 4थी व 5वीं के बच्चे किताब पढ़ रहे थे। इसके बाद नीतू और मुस्कान ने ''मछली'' वाली और ''एक समुंदर'' वाली, दो कविताओं का हावभाव के साथ गायन किया।

21 जून 2019

आज कुशल पूरे समय उपस्थित रहा। उससे पूछा कि कल उसने कुछ बनाया था क्या? तो उसने कहा, ''कल तो कुछ नहीं बनाया। गुल्ली तोड़ने गया था। आज भी जाना है।'' दूसरे बच्चों के साथ बुकलेट बनाने के लिए वह चित्र बना रहा था। छोटी किताबों के चित्रों को वह कोरे कागज पर पेंसिल से ट्रेसिंग कर रहा था। मैंने उसे नकल करने के बजाए मन से चित्र बनाने को कहा तो वह कुछ पल बाद मन से चित्र बनाने लगा। फिर अंदर कमरे में जाकर पुस्तकालय की किताबों के चित्र देख रहा था व पढ़ने की कोशिश कर रहा था।

आज छुट्टी के बाद कुशल जब कमरे से बाहर आया तो उसके हाथ में कुछ रहा होगा। क्या था? यह अंत तक पता नहीं चल पाया लेकिन उसके दोस्त बार-बार कह रहे थे कि कुशल कुछ चुरा के ले जा रहा है। कुशल से पूछा, ''कुछ लेकर जा रहे हो क्या? यदि कुछ ले जा रहे हो तो बता दो, सोमवार को ले आना।'' इतने में उसके 4-5 दोस्तों ने उसे पकड़ लिया और नीचे गिरा दिया। मैं भागते-भागते गया और उन्हे अलग किया। उन्हें समझाया कि अपने साथी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। कुशल के पास कुछ नहीं दिखा।सभी को अच्छे से समझाने का प्रयास किया। लेकिन कुशल और उसके दोस्त गुस्से में लग रहे थे। आज यह अच्छा नहीं हुआ।

24 जून 2019

आज कुशल नहीं आया। आज गाँव में दिकड़ी का कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम में सभी घरों से आटा, दाल, चावल अन्य सामग्री माँग कर माता मंदिर में सभी लोग मिलकर खाना बनाते हैं। कुशल भी सामग्री माँगने वाली टीम के साथ मिलकर गाँव में घूम रहा था। सामग्री माँगनें वाली टीम में से अनुसूचित जाति (मोची) समाज के घरों में कोई नहीं गया। यह देखकर समझ में आया कि इस गाँव में जातिवाद बरकरार है।

25 जून 2019

कुशल आज नहीं आया। संपर्क के दौरान वह घर में नहीं मिला। उसकी माँ को भी पता नहीं था कि वह कहाँ गया है।

26 जून 2019

आज कुशल पूरे समय उपस्थित था, लेकिन स्कूल के पीछे के मैदान में रहा। बच्चों के साथ केन्द्र में होने वाली गतिविधियों में शामिल नहीं रहा। बारिश से इकट्ठा हुए पानी में लकड़ी मार-मार कर पानी उछाल रहा था। बाद में प्लास्टिक की बॉल को लकड़ी से मार-मार कर खेलता रहा। एक बॉल को

पूरा तोड़ दिया। उसे अंदर बुलाने का बहुत प्रयास किया लेकिन वह नहीं आया। एक बच्ची ने उससे बॉल माँगी तो उसने लगभग 5 फीट की बाँस फेंक कर उसे मारा। यह अच्छा हुआ कि वह बाँस कॉलम से टकरा कर रुक गया। लकड़ी मारने के बाद वह स्कूल के पीछे भाग गया। मैं उसे समझाने के लिए गया तो वह और दूर चला गया। बार-बार रुकने को बोलने पर वह रुक गया। उसे समझाने का बहुत प्रयास किया। वह चुपचाप सुनते रहा और कुछ समय के बाद घर की तरफ चला गया।

27 जून 2019 आज कुशल नहीं आया। घर में भी नहीं मिला।

01 जुलाई 2019 आज कुशल नहीं आया।

5 जुलाई 2019

लगभग एक सप्ताह के बाद आज कुशल आया और पूरे समय उपस्थित रहा। मैंने उससे पूछा कि वह इतने दिनों से कहाँ थे? केन्द्र में क्यों नहीं आ रहा था? उसने कहा कि उसकी मम्मी ने आने से मना किया है। मैंने उसे बताया कि इस बीच हमारी, उसकी मम्मी से दो बार बात हुई थी और उन्होंने कहा था कि वह घर में नहीं है, वह तो स्कूल का बोलकर गया है। पर हमने उसकी माँ को बताया कि वह केन्द्र में नहीं आया। तब वह हँसने लगा, कुछ बोला नहीं। वह लकड़ी के चक्कों से गाड़ी बनाकर लाया था। उसे मैदान में चला रहा था। उसे देखकर दूसरे बच्चे भी गाड़ी चला रहे थे। थोड़ी देर के बाद उन्हें बुलाकर बैठवाया। प्रमिला ने सभी को कॉपी और छोटी किताबें दी। सभी बच्चे किताबों की संख्या की आउट लाईन में रंग भर रहे थे। मैंने कहा कि रंग करने के पहले और बाद में उसे गिनना है। सभी गिन रहे थे। दो-तीन बच्चों को दिक्कत हो रही थी, उनके साथी उनकी मदद कर रहे थे। सभी को मज़ा आ रहा था। कुशल ने कुछ समय तक रंग भरने का काम किया। उसे गिनने के बारे में बताया तो वह गिन कर रंग भरने लगा।

कुछ समय के बाद वह फिर मैदान में जाकर गाड़ी चलाने लगा। उसे वापस बुलाकर उसकी कॉपी में नाम लिखने के लिए कहा तो उसने अपना नाम लिख दिया। जब कहा कि मम्मी-पापा का नाम लिखकर बताओ तो उसने कहा कि नहीं आता। उसकी कॉपी में उसकी मम्मी, पापा का नाम लिख कर कहा कि इसे देखकर चार-पाँच बार लिखो। उसने एक बार मम्मी का नाम लिखने का प्रयास किया लेकिन उसके बाद वह कॉपी रखकर स्कूल के पीछे चला गया। खेत में से पुरानी पानी की बॉटल, लोहे की चादर जैसी चीजें बीन रहा था। मैं उसके पास गया और पूछा कि वह क्या कर रहा है? वह बोला कि इनसे वह कुछ बनाएगा। मैंने कहा कि जो भी वह बनाएगा उसे ज़रूर दिखाए। इसके बाद वह घर चला गया। जाते समय उसने कहा कि वह रोज़ केन्द्र और स्कूल में आया करूँगा।

11 जुलाई 2019

आज कुशल आया था। ऑयल के लीटर वाले खाली डिब्बे की गाड़ी बनाकर लाया था। उसमें मिट्टी भरकर मैदान में चला रहा था। मैं उसे बुलाकर लाया और 9 +1 को जोड़ने वाला सवाल दिया। उसे कॉपी में करने में दिक्कत हो रही थी। कंकड़ से करवाने पर उसने अच्छे से कर लिया। इसी तरह से उसे दो-तीन सवाल दिए तो उसने कर लिए।

सवाल करने के बाद वह बाल्टी लेकर हैंडपंप चला गया। पानी लेकर आया और गेंदे के पौधों में पानी डालने लगा। इसके बाद सभी बच्चे मैदान में ''हमारी रेल जाने दो, हमारी पुलिया टूटी है'' वाला खेल खेल रहे थे। कुशल इस खेल में शामिल नहीं हुआ। वह पौधों में पानी डालते रहा।

12 जुलाई 2019 आज पालक बैठक करने के लिए पालकों से घर-घर जाकर संपर्क किया और एक मोहल्ले में बैठक की जिसमें 13 महिलाएँ शामिल रहीं।

15 और **17 जुलाई 2019** को कुशल नहीं आया।

कुशल के पिता से बातचीत

काफी दिनों से कुशल के पापा से बातचीत करने का प्रयास कर रहा था। लेकिन वह मिल नहीं पा रहे थे। आज कुशल के पापा ओमप्रकाश जी से बातचीत हुई। मैंने उनसे कहा कि कुशल शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में अच्छा काम कर रहा है और उसके कामों के फोटो उन्हें दिखाना चाहता हूँ।

उन्होंने कहा, ''कुशल अच्छा काम कर रहा है तो यह तो बड़ी खुशी की बात है। हम लोग तो उससे बहुत परेशान हैं। घर में तो वह किसी की भी नहीं सुनता, वह अपने मन से कुछ-कुछ करते रहता है। बोलने समझाने पर भी वह किसी की नहीं सुनता। वह घर में कोई काम नहीं करता। उसको मैंने कई बार खेत में भेजा, बैल चराने के लिए भेजा तो हाँ बोलकर गया लेकिन खेत में न जाकर वह नदी में नहाने चला गया। बैलों को घर से लेकर गया और जंगल में छोड़कर वापस आ गया। हम लोगों से घर में ज़्यादा बातचीत नहीं करता। कई बार तो वह रात में घर भी नहीं आता। उसे ढूँढकर लाना पड़ता है।'' मैंने पूछा कि वह रात में कहाँ रहता है?'' उन्होंने बताया, ''मेरे चाचा, दादा के यहाँ या सरपंच के घर पर सो जाता है। तीन-चार बार तो उसने बच्चों को पत्थर से, लकड़ी से मारकर सिर फोड़ दिया। उन बच्चों के माता-पिता को समझाकर उनका इलाज करवाया।

मैंने उसको कई बार अच्छे से डॉक्टर की मदद से भी समझाया। कई बार तो उसकी जमकर पिटाई भी की लेकिन उसको कोई असर नहीं हो रहा है। मेरे को समझ में नहीं आ

रहा है कि मैं क्या करूँ? स्कूल से भी उसकी बहुत शिकायत आती रहती है। अब आप बताओं कि मैं क्या करूँ?'' मैंने कहा, ''आप परेशान मत हो, उसे डाँटना, पीटना बंद कर दो। उससे अच्छे से प्यार से बातचीत करना शुरु कर दो। यहाँ केन्द्र में प्रमिला और मैं हम दोनो उससे अच्छे से बात करते हैं। कुछ समय तक तो वह अच्छे से काम करता है। फिर वह मैदान में खेलते रहता है। दो-तीन बार उसे अच्छे से बुलाते हैं तो वह आकर काम करता है।'' उन्होंने कहा, ''ठीक है, आप कह रहे हो तो आज से मैं उसको डाँटना, मारना बंद कर देता हूँ। प्यार से बात करना शुरु करके देखता हूँ।'' मैंने कहा कि यह भी हो सकता है कि आपके डाँटने मारने के कारण, डर के कारण वह दूसरों के घर रुकता हो।

फिर मौसम, खेती, बारिश आदि की चर्चा करते हुए पूछा कि कुशल की तबीयत खराब रहती है क्या? कभी वह लंबे समय तक बीमार रहा क्या? उन्होंने बताया, ''बचपन में वह बहुत बीमार रहा था। उसके ऊपर बहुत पैसा खर्च किया। मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के बाद भी ब्याज से पैसा लेकर उसका इलाज करवाया। हमेशा उसकी पसली चलती थी, 10 दिन तो वह इटारसी के अस्पताल में ऑक्सीजन पर रहा। साढ़े तीन साल तक वह बहुत बीमार रहा। पहले तो बहुत दुबला था। अभी तो उसकी हालत ठीक है। साढ़े तीन साल में उसने चलना शुरु किया। बोलना भी बहुत लेट शुरु किया।''

मैंने पूछा कि जन्म के समय वह रोया था या नहीं? उन्होंने बताया कि नहीं रोया था। उसको इटारसी लेकर गए थे वहाँ पर उसको दो इंजेक्शन लगाए उसके बाद वह रोया था। उनसे पूछा कि कुशल का जन्म कितने माह में हुआ था? उन्होंने बताया, "उसका जन्म समय से 15-20 दिन पहले हुआ था। डाक्टर ने कहा था कि जन्म के तुरंत बाद बच्चे का रोना बहुत ज़रूरी होता है। इसका ध्यान रखना। मैं उसी समय से और इसकी इन हरकतों के कारण बहुत सोचते रहता हूँ। पता नहीं वह ठीक होगा या ऐसा ही रहेगा।" मैंने उनसे कहा, "आप परेशान मत हो, चिंता मत करो। जैसा आपने बताया की साढ़े तीन साल में चलने-बोलने लगा तो बाकी की चीज़ें भी थोड़ी लेट हो सकती हैं। आप लोग उसे डाँटना, मारना बंद कर दो।" ओमप्रकाश जी ने कहा कि आज से मैं उसे न डाँटूँगा, न मारूँगा।

18 जुलाई 2019

आज कुशल कुछ समय के लिए केन्द्र में आया और एक अंक वाले दो जोड़ के सवाल सही करने के बाद पुस्तकालय की किताब ''इल्ली के जूते'' के चित्र देख रहा था। मैं उसके पास गया और उसमें लिखे वाक्य को पढ़वाने की कोशिश कर रहा था। वह बोला कि वह पानी पीकर आता है पर वह वापस नहीं आया।

22 जुलाई 2019

आज कुशल नहीं आया था। वापसी के दौरान ग्राम डांडीवाड़ा में मुझे कुशल के पापा मिले थे। उन्होंने मेरे से पूछा कि उस दिन कुशल आया था या नहीं? मैंने बताया कि वह नहीं आया था। वह बोले, ''आज सुबह मैंने उसको पैसे दिए और कहा था कि दूकान से टोस्ट लेकर आ जा और तीनों भाई बहन खाकर केन्द्र में चले जाना। वह टोस्ट लेकर आया और सबने साथ में खाया और स्कूल का बोलकर गया था। आज शाम को पूछता हूँ।''

23 जुलाई 2019

आज कुशल आया था। आते ही मेरे पास आया और पूछा, ''आज कितनी तारीख है?'' मैंने कहा, ''आज 23 तारीख है।'' वह चॉक लेकर गया और बोर्ड पर तारीख लिख दी। इसके बाद उसके साथी समीर ने बोर्ड पर मंगल लिखकर छोड़ दिया। कुशल ने उसके आगे वार लिखकर मंगलवार पूरा कर दिया। इसके बाद चॉक से बोर्ड पर रेल का चित्र बनाने लगा। पहले उसने इंजन और डिब्बा बनाया, उसके बाद मिटाकर डांडीवाड़ा जोड़ पर रेलवे लाईन, पुल, ब्रेकर, पुलिया आदि का चित्र का नक्शा बनाया। उसने वहाँ की सभी चीजों को बहुत अच्छे से बनाया, और बनाते समय उसके साथी समीर को बता रहा था। उसी समय कुशल के पापा उसकी फोटो देखने के लिए केन्द्र में आए। केन्द्र का अवलोकन किया। बच्चों के द्वारा बनाई चीजों को देखकर बहुत खुश हुए। फिर मैंने उन्हे 1 मई से अभी तक के फोटो दिखाए। फोटो देखकर बहुत खुश हो रहे थे। बाद में उन्होंने कहा कि यहाँ तो कुशल अच्छा काम कर रहा है। स्कूल से तो हमेशा उसकी शिकायत ही मिलती रहती है। उन्होंने बताया, ''आपने उस दिन मेरे को समझाया था कि कुशल को डाँटना-पीटना बंद कर दो, उस दिन से मैं उससे अच्छे से बात कर रहा हूँ। अंतर देखा है। पहले वह मेरे से बात नहीं करता था। मैं उससे कुछ बोलता था, तो वह मेरी तरफ देखते रहता था। कुछ जवाब नहीं देता था, केवल हाँ-हूँ करता था। लेकिन एक-दो दिनों से वह मेरे से बात करता है। कल रात को मेरे से बहुत बात कर रहा था। आपने मेरे को अच्छी सलाह दी है।'' मैंने उनसे कहा, "आप कुशल को प्रतिदिन सुबह केन्द्र में और स्कूल भेजते रहो। हम लोग केन्द्र में प्रयास कर रहे हैं। आप लोग घर में प्रयास करो। हमने ये फोटो स्कूल के शिक्षकों को भी दिखाए हैं। उनसे भी बात हुई है और आगे भी करते रहेंगे।"

2. गोमती

गोमती वीरगुहारी गाँव की रहने वाली है और चौथी कक्षा में पढ़ती है। वह एक आदिवासी, भूमिहीन परिवार से है और माता-पिता मज़दूरी एवं बकरी पालन करते हैं। उसकी परिवार की जानकारी इस प्रकार है।

क्रं	नाम	गोमती से संबंध	उम्र	शैक्षणिक योग्यता
1	ओमप्रकाश	पिता	लगभग 35 वर्ष	निरक्षर
2	सुगरती	माँ	लगभग 30 वर्ष	निरक्षर
3	सोनिका	बहन	12 वर्ष	7 वीं में अध्यनरत
4	गोमती	स्वयं	9 वर्ष	4 थी में अध्यनरत
5	संदीप	भाई	6 वर्ष	1 ली में अध्यनरत

केन्द्र संचालिका प्रमिला के अनुसार गोमती की केन्द्र में उपस्थिति अच्छी है। नवम्बर 2017 से अक्टूबर 2018 तक केन्द्र 231 दिन लगा और गोमती 184 दिन उपस्थित रही, यानि उसकी उपस्थिति लगभग 80 प्रतिशत थी। नवम्बर 2018 से अप्रैल 2019 तक केन्द्र 127 दिन लगा और गोमती केन्द्र में 90 दिन उपस्थित रही, यानी 71 प्रतिशत उपस्थिति। गोमती को कोई शारिरिक समस्या नहीं है। उसे कुछ कहते हैं तो वह ध्यान नहीं देती। अपने मन से काम करती रहती है। पढ़ाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती। वह शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र के ग्रूप सी में है। प्रधान अध्यापक मनोजजी के अनुसार गोमती मंदबुद्धि है। स्कूल आती है पर काम में उसका मन नहीं लगता। वह चुपचाप रहती है, उससे बात करो तो वह जवाब भी नहीं देती। अकेली-अकेली काम करते रहती है। गुमसुम रहती है।

इस केस स्टडी हेतु गोमती का सतत अवलोकन 10 मई 2019 से 29 जलाई 2019 तक किया गया।

10 मई 2019

आज 10 बच्चे उपस्थित थे और गोमती भी पूरे समय उपस्थित रही। इस माह में गोमती अभी तक नहीं आई थी। जब वह आज आई और उसने कमरे में लगे चित्रों को देखा तो उसने कहा, ‘’मैं भी बनाऊँगी।‘’ मैंने उसे धागे से एक चित्र बनाकर बताया। वह उसे देखकर बहुत खुश हुई। उसने चार-पाँच चित्र बनाए और धागे से बने दो चित्रों में मोमचॉक से रंग भरा। फिर उन चित्रों पर अपना नाम व आज की तारीख दर्ज करके अपनी फाईल में लगाया।

इसके बाद उसने अपने मन से एक लड़की का चित्र बनाया और उस चित्र पर अपना नाम व तारीख लिखी। गलती से वह लड़की के चित्र में हाथ बनाना भूल गई थी। उसने वह चित्र लाकर मुझे बताया। मैंने उसकी बहुत तारीफ की और धीरे से कहा, “क्या इस लड़की के हाथ नहीं है?” तुरंत जाकर उसने दो हाथ बना दिए। फिर बताया तो मैंने कहा, “इस लड़की के बाल नहीं है क्या?” उसने तुरंत उसके सिर में बाल बना दिए? फिर मैंने कहा, “इसके दांत नहीं है क्या?” उसने दांत भी बना दिए। उसे यह सब करने में बहुत मज़ा आ रहा था।

छुट्टी के समय उसने व दूसरे बच्चों ने मुझसे बाय-बाय किया और पूछा कि अब मैं कब आऊँगा। मैंने कहा, “कल हम लोगों की मीटिंग है, परसों रविवार है। सोमवार को आऊँगा”। तो वे कहने लगे, ‘’रोज़ आया करो।‘’

गोमती ने बताया वह आज उसकी नानी के यहाँ शादी में जाएगी। मैंने उससे पूछा, “वापस कब आओगी, तो उसने कहा, ‘’मैं कल के अगले दिन आ जाउँगी।”

13 मई 2019 मैं केन्द्र नहीं जा पाया पर प्रमिला ने बताया कि गोमती आई थी।

16 मई 2019 आज गोमती नहीं आई। उसकी सहेलियों ने बताया कि वह मौसी की शादी में गई है।

17 मई 2019 गोमती शादी से नहीं लौटी, इसलिए वह आज केन्द्र में नहीं आई।

23 मई 2019

आज सुबह पहुँचा तो केन्द्र बंद था। तीन बच्चे बाहर बरामदे में खेल रहे थे। गोमती आई थी। गोमती ने मुझसे कहा, ‘’आज मैम नहीं आई है। तो आप क्यों आए?” मैंने पूछा, “मैम क्यों नहीं आई?” तो बच्चों ने कहा “पता नहीं पर कल कह रही थी कि मैं कल आऊँगी।” मैंने कहा, “कोई बात नहीं अपन यहीं पर बैठकर कुछ करते है।” बच्चे बोले, “सरपंच के पास चाबी है, हम अभी लेकर आते हैं।” तो मैंने कहा, “रहने दो नीचे बैठ जाते है।” लेकिन बच्चे नहीं माने। वे तीनों सरपंच के घर चले गए और सरपंच को चाबी लेकर बुला लाए, लेकिन उस चाबी से ताला नहीं खुला। सरपंच ने अपने घर से चटाई भिजवाई। तब तक दो बच्चे और आ गए। आज कुल 5 बच्चे उपस्थित रहे। चटाई पर बैठकर हमने पहले तो कच्चे आम (केरी) के बारे में चर्चा की। उसका रंग कैसा होता है? उसका स्वाद कैसा होता है? किस-किस के घर आम लगे हैं? उसके उपयोग के बारे में चर्चा की। कुछ बच्चों ने बताया कि उनके घर में है, किसी ने कहा कि उनके घर में नहीं है। कच्चा रहता है तब उसका रंग हरा होता है और पकने के बाद पीला हो जाता है। कच्चा वाला खट्टा लगता है और पका वाला मीठा। मैंने पूछा, “अभी आम कच्चे हैं या पके?” सभी ने बताया, “अभी तो कच्चा है।” मैंने पूछा, “अभी आप लोग कच्चे आम का क्या करते हो?’’ तो उन्होंने बताया कि उसको छीलकर नमक के साथ खाते हैं। वंदना ने बताया कि वह नमक में मिर्च मिलाकर खाती है। आमरस बनाते हैं, दाल में या सब्जी में डालते हैं, अचार बनाते हैं, और लोंजी बनाते हैं। इस तरह से काफी चर्चा हुई।

चर्चा के दौरान मैं फोटो लेने के लिए खड़ा हुआ तो सभी बच्चों ने कहा, “आप हमेशा फोटो लेते हो वह फोटो हमें दिखाओ।'' तो मैंने लैपटॉप से 1 मई से अभी तक के फोटो दिखाए। फोटो दिखाना शुरू किया तो कुछ बच्चे बोले कि कुशल के बहुत फ़ोटो हैं हमारे तो बहुत कम हैं। मैंने बताया कि कुशल ज़्यादा दिन आया है। बाकि के कभी आते थे तो कभी नहीं आते थे। कम दिन आने वालों के फोटो कम हैं। बच्चे आपस में चर्चा कर रहे थे कि अब रोज़ आना पड़ेगा। फोटो देखने के बाद बच्चे ज़िद करने लगे कि कोई फिल्म दिखओ तो मैंने पहले 4-5 डाउनलोड की हुई कविताएँ दिखायीं। इसके बाद 2-3 कहानी दिखाई और उस पर विस्तृत चर्चा की। बच्चों को कविता-कहानी और चर्चा में बहुत मज़ा आ रहा था। जब मैं जाने लगा तो सभी बच्चे बोले, ''कम्प्यूटर रोज़ लेकर आना।''

24 मई 2019

आज गोमती नहीं आई थी। उसके दोस्तों ने बताया कि पिछले दिन वह बेहोश हो गई थी, इसलिए वह आज नहीं आई। उसके ऊपर पानी डाला, तब उसको होश आया था। छुट्टी के बाद मैं उसके घर गया तो वह सामने वाले घर में बैठी थी। उसकी माँ बकरी चराने गई थी। गोमती से मैंने बात की तो उसने बताया कि वह धूप में खेल रही थी इसलिए उसे चक्कर आ गए। मैंने उसे धूप में खेलने से मना किया।

28 मई 2019

आज कुल 11 बच्चे उपस्थित रहे जिसमें गोमती भी थी। सभी बच्चों के साथ वह स्वतंत्र चित्र बना रही थी। चित्र बनाने के बाद मोम कलर से रंग किया, अपना नाम व आज की तारीख लिखकर उस चित्र को फाईल में लगाकर पानी पीने गई। उधर से आने के बाद ‘बोलो भाई कितने? आप बोलो जितने’ वाला खेल में शामिल रही।

छुट्टी के बाद मैं उसके साथ उसके घर गया। आज उसके मम्मी-पापा दोनों मिले। मैंने उनसे नमस्ते करते हुए कहा, ''गोमती को रोज़ केन्द्र में भेजा करो, वह बहुत अच्छा काम करती है।'' फिर उस दिन के बारे में पूछा जब गोमती को चक्कर आया था और वह बेहोश हो गई थी। वे बोले, ''हम लोग बकरी चराने या काम पर चले जाते हैं तो ये लोग धूप में खेलते रहते हैं, इसी से उसको चक्कर आया और वह बेहोश हो गई थी। उसके उपर पानी डाला तो वह होश में आ गई।'' उसके पापा ने कहा कि वह शरीर से दुबली-पतली, कमज़ोर है। इसलिए उसके साथ ऐसा हुआ होगा।

तब तक उन्होंने कुछ बकरियों को कोठे से छोड़ दिया था। अतः उसके माँ-पिता बकरी चराने चले गए।

उनके जाने के बाद गोमती ने मुझसे बहुत बातें कीं। सबसे पहले तो उसने मुझसे पूछा, “कल क्यों नहीं आए थे?” मैंने बताया कि भौंरा में मीटिंग थी इसलिए नहीं आ पाया। फिर उसने पूछा, “कल आओगे कि नहीं?” मैंने कहा “कल मैं आऊँगा।” फिर उसने पूछा, “कल मेरे लिए बिस्कुट लाओगे क्या? बिस्कुट खाने की बहुत इच्छा हो रही है, हमारे गाँव में अच्छे वाले नहीं मिलते।” मैंने कहा, “ठीक है। कल लेकर आऊँगा।” उसने पूछा “आप कहाँ रहते हो?” मैंने बताया “शाहपुर में रहता हूँ।” उसने कहा, “शाहपुर तो मैंने देखा है, तुम कहाँ रहते हो?” मैंने उसे पता बताने की कोशिश की।

फिर मैंने उससे पूछा कि उसके घर में कौन-कौन रहता है। उसने बताया कि उसके घर में उसके मम्मी-पापा, एक बहन और एक भाई है। मैंने पूछा, “तुम्हारी बहन तुम से छोटी है या बड़ी? उसने बताया, “मेरे से बड़ी है, भाई मेरे से छोटा है।” मैंने उससे कहा, “कल तुम मम्मी-पापा को सुबह केन्द्र में लेकर आना। उन्हे अपन उस दिन वाले फोटो दिखाएँगे। तो उसने कहा, ''मैं बोल दूँगी। अगर वह नहीं आए तो तुम मेरे घर आकर दिखाना।''

जब मैं आने लगा तो उसने कहा, ''हमारे स्कूल का नल खराब हो गया है। उसमें पानी नहीं आता, आँगनवाड़ी के नल में कदला (गंदा) पानी आता है। अच्छा नहीं लगता।'' मैंने पूछा, ''गाँव के कौन से नल का पानी अच्छा लगता है?” तो उसने बताया, ''यह वाले नल का पानी अच्छा लगता है।'' तो मैंने पूछा, ''तुम्हारे घर में पानी की बॉटल है क्या?” उसने कहा, ''मेरे पापा एक दिन भौरा से ठंडे की बॉटल लाए थे वह रखी है।'' मैंने उसे अगले दिन से उस बॉटल में उस नल का पानी लाने के लिए कहा। वह बोली, “ठीक है, मैं कल लेकर आऊँगी लेकिन मेरी बॉटल का पानी बाकि के लोग पी लेंगे तो मेरे को तो फिर आँगनवाड़ी जाना पड़ेगा।” मैंने कहा, ''कल अपन सभी को बोलेंगे कि सभी लोग बॉटल में इस नल का पानी लेकर आएँ।''

गोमती पहले मेरे से कम बातें करती थी। जब वह बेहोश हुई और हम उससे मिलने गए, उसके मम्मी-पापा से बातचीत की, उससे बातचीत की, तब से वह मुझसे बहुत बात करने लगी है।

29 मई 2019

आज जब मैं पहुँचा तो सभी बच्चे पुस्तकालय की किताबें देख रहे थे। चित्रों को देखकर आपस में चर्चा कर रहे थे। कुछ बच्चे किताबों को पढ़ रहे थे। दो-तीन बच्चों के साथ संचालिका अलग से बैठी थी और चित्रों को दिखाकर उस पर चर्चा कर रही थी।

गोमती फटी किताबों को छाँट रही थी और उसकी सहेली फेविकोल से चिपका रही थी। गोमती फेविकोल को सुखाने के लिए किताबों को धूप में रख रही थी। फिर वह सहेलियों

के साथ पत्थर से गोटी वाला खेल खेलने लगी। पत्थर को उपर उछालती और उसे कैच कर रही थी।

वादे के अनुसार आज मैं सभी बच्चों के लिए पारले जी बिस्कुट के पैकेट लेकर गया था। सभी को गोल घेरे में बैठाकर बिस्कुट दिए। सभी ने मज़े से खाए और उसके बाद पानी पीने के लिए आँगनवाड़ी के हैंडपंप गए।

बच्चे वापस आए, तो सभी को गोल घेरे में बिठाकर मैंने ''महागिरी'' पुस्तक के चित्र दिखाते हुए हाव-भाव के साथ कहानी सुनाई। कुछ बच्चों ने सही का हाथी नहीं देखा था। टीवी व किताबों में ज़रूर देखा है। पहले हाथी के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए यह कहानी सुनाई। बाद में कुछ सवाल किए जैसे, "यदि तुम लोग हाथी की जगह होते तो वह खंभा गड्ढे में डाल देते क्या?" तो बच्चों ने कहा, "नहीं डालते क्योंकि उसमें बिल्ली थी।" मैंने पूछा, "महावत ने लकड़ी से और बाद में तो चाकू से भी हाथी पर वार किए। यदि कोई तुम्हारे साथ ऐसा करते तो तुम क्या करते?" बच्चों ने कहा, "हाथी बोल नहीं पाता इसलिए वह बोल नहीं पाया, हम लोग तो सभी को बता देते किः गड्ढे में बिल्ली है। तो हमारी पिटाई नहीं होती।" मैंने पूछा, "हाथी ने अच्छा काम किया या बुरा किया?" तो बच्चों ने कहा कि हाथी ने बहुत अच्छा काम किया। फिर मैंने पूछा, "यदि गड्ढे में चूहा या चींटी होती तो तुम लोग क्या करते?" बच्चे बोले, "गड्ढे में कुछ भी होता तब भी हम खंभें को नहीं डालते। हम किसी की जान नहीं लेते।"

फिर बच्चों के साथ सामूहिक चर्चा की गई, कि गाँव में कुल कितनी मोटर सायकल हैं? कितनी सायकल हैं? यह ज़िम्मेदारी तीन मोहल्ले के अलग-अलग बच्चों को दी गई।

30 मई 2019 आज गोमती नहीं आई। बाज़ार के दिन स्वयं सहायता समुह की मीटिंग में उसकी मम्मी गई थी। इसलिए वह घर का काम कर रही थी।

4 जून 2019

आज गोमती पूरे समय उपस्थित रही। पहले पत्ती उठाने वाले खेल खेला। उसके बाद सभी बच्चे पानी पीने चले गए वापस आकर वंदना व गोमती पत्थर उछालने व उसे झेलने वाला खेल खेल रहे थे। मैंने कहा, "पत्थर गिनकर बताओ।" तो दोनों पत्थर गिनने में लग गए। गिनते समय बीच की संख्या को छोड़ देते थे। इसके बाद सभी बच्चों को सामूहिक बैठाकर अगले दिन बीज बोने की तैयारी की जिसमें सभी को अपने घरों से कुछ बीज लाने थे। साथ ही तीली के बंडल बनाने की प्लानिंग की गई।

5 जून 2019

आज गोमती आई थी। गोमती, उसकी बड़ी बहन तथा एक और बच्ची के साथ मिलकर गाँव में संपर्क किया। संपर्क के दौरान कुशल के घर गए। जब स्कूल पहुँचे तो केन्द्र की चाबी नहीं मिली। आज बीज बोने का प्लान था पर चाबी न होने के कारण हमने तीली बंडल बनाने का काम किया।

आज गोमती की मम्मी से मैंने पूछा कि गोमती के पापा कहाँ है? तो उन्होंने बताया कि वह काम करने के लिए दूसरे गाँव में गए हैं। मैंने पूछा, "गोमती को गाँव के लोग ''लूली'' क्यों कहते हैं?" उसकी मम्मी कुछ बोलती इसके पहले ही गोमती ने बताया, "एक बार मेरा एक पैर मुड़ गया था, मोच आ गई। तब बहुत दिन तक मैं लँगड़ी-लँगड़ी चलती थी, तो मेरे को सभी लूली बोलने लगे।"

06 जून 2019

आज केन्द्र पहुँचा तो गोमती के साथ 9 बच्चे उपस्थित थे। बच्चे घर से कुछ और तीली के बंडल बनाकर लाए थे। उन्ही बंडलों व खुली तीलियों के साथ दहाई-इकाई का खेल खेलते रहे। मैं अलग-अलग बच्चों को अलग-अलग संख्या बोलता था जैसे 10, 15, 20, 23, 9, 5, 29, 17, 13 । इस तरह से बोलते रहा तो एक-दो बच्चों को छोड़कर सभी बच्चे अच्छे से बंडल व खुली तीलियाँ मिलाकर सही संख्या दे रहे थे। गोमती ने 4-5 संख्याओं के लिए सही मात्रा में तीलियाँ उठाकर दीं लेकिन 29, 9, 23, 17 नहीं दे पायी। उसकी सहेली रितिका उसकी मदद कर रही थी।

अभी गुल्ली (महुआ के फूल) के पकने की शुरुआत हो रही है। बच्चे गुल्ली तोड़कर लाते हैं। आज उस पर चर्चा हुई। मैंने पूछा, "गुल्ली तोड़ने कौन-कौन जाते हैं?" सभी ने हाथ उठाए तो मैंने पूछा, "किस-किस ने कितनी-कितनी गुल्ली तोड़ी है? बच्चों ने हाथ फैलाकर बताया कि इतनी-इतनी तोड़ी है, हाथ फैलाने के हिसाब से यह समझ में आया कि लगभग 2-3 किलो गुल्ली तोड़ी होगी। मैंने पूछा,"अब इसका क्या करोगे?" तो लगभग सभी बच्चों ने कहा कि आईसक्रीम, चॉकलेट, बिस्कुट खाएँगे लेकिन गोमती व उसके भाई ने कहा, "हम तो गंज (ढेर) सारी तोड़ेंगे और बेचकर कपड़े खरीदेगें।" मैंने पूछा, "तुम दोनो आईसक्रीम नहीं खाओगें?" गोमती ने कहा, "2-3 ही खाएँगे। मेरे कपड़े फट गए हैं। मम्मी-पापा लाकर नहीं दे रहे हैं। गुल्ली को सुखाकर दुकान में बेचकर पापा के साथ भौंरा जाकर कपड़े लाऊँगी।" उसके छोटे भाई ने कहा, "मैं तो मम्मी के साथ जाऊँगा और जींस वाला पेंट और शर्ट लाऊँगा। मेरी चप्पल टूट गई है तो चप्पल और चश्मा लाऊँगा।"

07 जून 2019

आज जब मैं केन्द्र पहुँचा तो केन्द्र संचालिका प्रमिला नहीं आई थी और बच्चे भी नहीं थे। मैं गोमती के घर गया तो वह

सो रही थी। मैंने पूछा क्या हुआ? उसने बताया कि उसे बुखार है। मैंने उससे धूप में खेलने से मना किया। उसकी बड़ी बहन ने बताया कि पापा काम पर गए हैं और मम्मी स्वयं सहायता समूह की बैठक में गई है। भाई ने बताया कि आज सब बच्चे गुल्ली तोड़ने गए हैं। संपर्क के दौरान बच्चे गाँव में नहीं मिले इस कारण आज बच्चों के साथ काम नहीं हो पाया। वापस लौटते समय रास्ते में तीन बच्चे मिले जो गुल्ली तोड़ रहे थे। उन्होंने बताया कि बाज़ार का दिन था इसलिए उन्हें बहुत सारी गुल्ली तोड़नी हैं।

10 जून 2019

गोमती आज नहीं आई। उसके घर गए तो उसकी मम्मी ने बताया कि वह और उसकी बड़ी बहन गुल्ली तोड़ने गई हैं। लगभग 8 बजे वह गुल्ली तोड़कर लौट रही थी तब मैंने उसे केन्द्र में बुलाया तो उसने कहा कि खाना खाकर आएगी। लेकिन वह नहीं आई।

11 जून 2019

गोमती आज भी नहीं आई। उसके भाई ने बताया कि वह गुल्ली तोड़ने गई है।

आज 6 बच्चे उपस्थित रहे। सभी बच्चे और प्रमिला पलाश के पत्ते तोड़ने आँगनवाड़ी के पास गए। पत्ते लाकर उसकी पातल बनाकर उससे दोने बनाने में लग गए। कुछ बच्चे मिट्टी लाकर बारीक करने का काम कर रहे थे। आज मेरे 2 साथी केन्द्र में आए और उन्होंने भी पत्तों से दोने बनाए। उसके बाद सभी ने दोने में पोलीथीन लगाकर मिट्टी व गोबर की खाद मिलाकर दोने में भरकर पानी डाला। फिर गेहूँ, चने, बल्लर, मक्के के बीज बोए। दोने व बीज बोने में आज बच्चों का उत्साह और भूमिका कुछ कम दिख रही थी। अगले दिन जब इस संदर्भ में चर्चा की तो उन्होंने बताया कि गिलहरी उनके बोए बीज खा लेती है।

बच्चों की छुट्टी के बाद प्रमिला के साथ प्लान किया कि अगली सुबह सभी अनियमित बच्चों को बुलाने जाएँगे और उनके मम्मी-पापा को नियमित भेजने के लिए समझाएँगे।

छुट्टी के बाद हम चारों गोमती के घर गए तो वह सामने वाले घर में बैठी थी। उससे केन्द्र में रोज़ आने के लिए कहा तो वह हाँ कह रही थी। उसकी मम्मी बकरी चराने गई थी। पापा घर में नहीं थे। मैंने उसकी बड़ी बहन से भी कहा कि वह भी अगले दिन आए और गोमती को साथ लाए। उसने भी हामी भरी।

फिर हमने सरपंच भैया से स्कूल में पानी की व्यवस्था के बारे में एवं डांडीवाड़ा स्कूल के दरवाज़े की मरम्मत के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि वे जल्दी से जल्दी व्यवस्था बनाने की कोशिश करेंगे।

12 जून 2019

आज गोमती पूरे समय उपस्थित रही। आज सुबह पौधों मे पानी डालने का काम किया। सभी बच्चे दोने के पास जाकर देख रहे थे कि अंकुरण हुआ या नहीं।

इसके बाद प्रमिला ने कार्डशीट पर पेंसिल से पेड़ की आउट लाईन बनाकर दी और सभी बच्चों को रंगीन कागज देकर निर्देश दिया कि सभी को अपने-अपने हाथों से छोटे-छोटे टुकड़े करने है। बच्चों ने छोटे-छोटे टुकड़े कर फेविकोल से आउट लाईन के अंदर चिपकाने का काम शुरु कर दिया। कुछ समय तक तो गोमती बड़े जोश और उत्साह के साथ कागज फाड़ने व चिपकाने का काम कर रही थी। लेकिन एकाध घंटे के बाद वह दूर जाकर बैठ गई। मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ। तो उसने बताया कि उसे भूख लग रही है। मैंने उसे घर जाकर खाना खाकर आने को कहा पर उसने बताया कि घर पर कोई नहीं है और ना ही खाना है। उसी समय एक बच्चा बिस्कुट का पैकेट लेकर आया। उसने उसमें से दो बिस्कुट खाए, थोड़ी देर के बाद उसको ठीक लगा और वह कागज काटने व चिपकाने लगी।

आज कोलाज चिपकाने का काम पूरा नहीं हो पाया। अगली सुबह उसे पूरा करके दीवार पर लगाने की योजना बनाई। इसी समय सरकारी स्कूल के प्रधान पाठक मनोज सर पहुँचे। वे बच्चों का काम देखकर बहुत खुश हो रहे थे। गर्मी की छुट्टीयों के दौरान बच्चों ने जो भी काम किए उसका भी अवलोकन करवाया गया।

17 जून 2019

जब मैं केन्द्र पहुँचा उस समय गोमती व उसकी बड़ी बहन गुल्ली तोड़कर लौट रहे थे। मैंने उनसे केन्द्र पर आने के लिए कहा तो गोमती ने कहा कि वह कुछ ही देर में आती है। केन्द्र संचालिका बच्चों को बुलाने के लिए गाँव में गई थी। कुछ समय के बाद गोमती व अन्य चार बच्चे आए। उसी समय गोमती के पापा ओमप्रकाश जी स्कूल के सामने से कहीं जा रहे थे। मैंने उनसे नमस्ते करते हुए उन्हे रोका। एक बार मैं उनसे पहले मिला था। लेकिन उस समय ज़्यादा बातचीत नहीं हो पाई। मैंने उनसे पूछा, ''भैया कहाँ जा रहे हो?'' उन्होंने बताया कि वे दूसरे गाँव (गुवाड़ी) में काम करने जा रहे हैं। जब मैंने पूछा कि वह कब लौटेंगे तो उन्होंने बताया कि वह 8-10 दिनों के बाद लौटेंगे। बारिश, मौसम, गर्मी के बारे में बात करते हुए मैंने उन्हें बताया कि गोमती केन्द्र में बहुत अच्छा काम कर रही है। पिछले माह से अभी तक उसने जो काम किए हैं उसके फोटो मेरे पास हैं और यदि देखने का समय हो तो देख सकते हैं। पर उस वक्त उन्हे जाना था सो उन्होंने कहा कि बाद में ज़रुर देखेंगे।

मैंने पूछा, ''गोमती घर में केन्द्र के बारे कुछ बताती है क्या?'' उन्होंने बताया, ''वह सुबह वाले स्कूल के बारे में बताती है।

उसे वह बहुत अच्छा लगता है। वह शरीर से बहुत दुबली है।'' मैंने पूछा, ''क्या वह खाना कम खाती है?'' वह बोले, ''नहीं ऐसा तो नहीं है, वह पेटभर खाना खाती है।'' मैंने पूछा, ''क्या उसकी तबीयत खराब रहती है? तो उन्होंने कहा, ''ऐसा नहीं है। उसकी तबीयत ठीक रहती है, पर दुबली होने के कारण, धूप में खेलने के कारण उसको एक-दो बार चक्कर आए थे। वैसे वह दिमाग से बहुत तेज़ है। घर में हम लोगों से बहुत बात करती है। घर के कामों में मदद करती है। हेंडपंप से कसेंडी (छोटी गुण्डी) में पानी लाती है। गोमती ज़्यादातर सरपंच के घर में रहती है। उसके नाती के साथ खेलती है। सरपंच हमारे परिवार का ही है। वहाँ रहने के लिए मैं उसे मना नहीं करता क्योंकि सरपंच के दोनों बच्चे पढ़े लिखे हैं। उनके घर पढ़े-लिखे लोग आते रहते हैं। अच्छी बाते सुनेगी तो इसका दिमाग भी बढ़ेगा और अच्छी बात करेगी। वहाँ पर ज़्यादा रहने से वह हम लोगों से अच्छी-अच्छी बात करती है।'' फिर आगे कहा, ''मेरे तीन बच्चे हैं। तीनों बच्चों के जन्म के समय से उसकी मम्मी का दूध उन्हे बिल्कूल नहीं मिल पाया। मैंने तीनों बच्चों को दूध पाउडर, गाय, बकरी के दूध पर ही पाला है। गोमती के जन्म के समय तो मेरे पास बिल्कूल भी पैसे नहीं थे। इसलिए उसे दूध पाउडर, गाय का दूध नहीं मिल पाया। उसे तो केवल घर की बकरी के दूध पर ही जैसे-तैसे पाला है। इसलिए वह ज़्यादा कमज़ोर है। हम लोग बहुत गरीब हैं। मेहनत-मज़दूरी करके, बकरी पाल के किसी तरह से गुज़ारा कर रहे हैं। अब तो काम भी ढंग से नहीं मिल रहा है। खेती करने के लिए ज़मीन भी नहीं है। किसी तरह से रुखी-सूखी खाकर पेट भर रहे हैं। कभी-कभी तो खाने के लिए भी कुछ नहीं रहता। आस-पास से माँगकर खाना पड़ता है। हमारी हालत बहुत खराब है। रहने के लिए ढंग का घर भी नहीं है। अभी सरकारी योजना से सरपंच ने घर बनवा दिया है, उस पर छत डालना बाकी है। अब मैं जा रहा हूँ । लौटकर आता हूँ फिर आराम से बातचीत करेंगे और फोटो भी देखेंगे।''

केन्द्र में आज 5 बच्चे पूरे समय उपस्थित रहे। 3-4 और बच्चे कुछ समय के लिए रहे और बाद में गुल्ली तोड़ने चले गए। गोमती ने इमली के बीजों को क्रम से 1 से 20 तक गिना। वह एक से बीस तक ठोस चीज़ों से अच्छे से गिन पाती है। उसके बाद उसे थोड़ी दिक्कत होती है।

इसके बाद मैंने उससे कहा कि अक्षर व मात्रा कार्ड से अपना नाम बनाकर बताओ तो उसने बनाने का प्रयास किया, मात्रा वाले कार्ड को जमाने में दिक्कत हो रही थी। एक बार मात्रा वाले कार्ड में अक्षर कार्ड को जमाने का तरीका बताया तो उसने बहुत अच्छे से बना दिया। मैंने उससे कहा कि घर के लोगों के नाम जमाकर बताओ तो उसने उसके छोटे भाई के नाम के अक्षर व मात्रा कार्ड उठाकर जमा दिया। भाई का नाम लिखने में उसने बड़ी की जगह छोटी की मात्रा वाला कार्ड जमाया। जमाते समय उसे बिल्कुल नहीं रोका। बाद में बताया तो उसे समझ में आया और उसने बाद में सही-सही जमाकर बताया।

इसके बाद मैंने उससे कहा कि मम्मी का नाम जमाकर बताओ तो उसने पहले बोर्ड पर लिखा। थोड़ी दिक्कत हो रही थी तो प्रमिला ने उसकी मदद की तो उसने पूरा नाम अच्छे से लिख लिया। बोर्ड के लिखे को देखकर अक्षर कार्ड व मात्रा कार्ड से सही-सही जमा दिया। इसके बाद उसको पापा का नाम जमाने के लिए कहा तो उसने मना कर दिया की मेरे को नहीं आता। मैंने पूछा कि पापा का नाम क्या है? उसने बताया कि ओमप्रकाश है। मैंने कहा कि जाओ बोर्ड पर लिखो तो उसने कहा कि उसे नहीं आता। बोर्ड पर लिखने में थोड़ा सहयोग किया तो उसने अच्छे से लिख दिया। उसे देख-देख कर अक्षर कार्ड व मात्रा कार्ड जमाते हुए वह मुझे व प्रमिला की तरफ बार-बार देख रही थी। बिखरे हुए अक्षर कार्डों में वह 'प्र' वाले कार्ड को ढूँढ रही थी, लेकिन यह कार्ड तो था ही नहीं। कुछ समय के बाद वह मेरे पास आई और बोली कि उसने जमा तो दिया है लेकिन एक कार्ड नहीं मिल रहा है। मैंने उससे पूछा कि क्या नहीं मिल रहा है? वह बोल नहीं पायी लेकिन उसने बोर्ड के पास जाकर कहा, ''यह नहीं मिल रहा है? अब क्या करूँ?'' मैंने कहा, ''सोचो, अब क्या कर सकते हैं?'' थोड़ा सोचने के बाद उसने प वाले कार्ड के नीचे दो इमली के बीज जमा दिए। शायद उसे लगा की ये तो बहुत बड़े हैं, उसने तुरंत हटा दिए। बाहर जाकर एक लकड़ी का टुकड़ा लेकर आई और उसे लगा दिया। प्रमिला ने कहा कि यह तो बहुत बड़ी है, तो उसने उसे तोड़कर रख दिया। लेकिन वह उससे खुश नहीं थी। मैंने पूछा गोमती क्या हुआ? वह बोली, ''यह सफेद रंग का अच्छा नहीं लग रहा है।'' मैंने पूछा, ''अब क्या करें?'' कुछ सोचने के बाद उसने काले रंग के मोमकलर से उस लकड़ी को काला करके जमा दिया। अच्छा दिख रहा था। देखकर वह भी बहुत खुश हुई।

इसके बाद वह शब्द चित्र कार्डों से बनाए नामों को देख-देख कर बोर्ड पर लिख रही थी। और अक्षर मात्रा को जोड़कर पढ़ने की कोशिश कर रही थी। बोर्ड पर लिखने के बाद सभी शब्द कार्डों को लेकर अलग बैठ गई और एक-एक कार्ड को उठाकर शब्द चित्र कार्ड का नाम बोल रही थी और उसे दूसरी तरफ रखती जी रही थी। किसी कार्ड के नाम में दिक्कत हो तो वह प्रमिला से मदद माँग लेती थी। उसे यह सब करने में बहुत मज़ा आ रहा था। इसके बाद वह गिनमाला से मोती गिनने लगी। 1 से 20 तक तो वह अच्छे से गिन पा रही थी, उसके बाद उसे दिक्कत हो रही थी। थोड़ी मदद के बाद आगे बोल तो पा रही थी लेकिन क्रम सही नहीं था।

18 जून 2019

आज गोमती बहुत लेट आई। आते ही वह अंक कार्डों को क्रम से जमाने लग गई। 0 से 20 तक अच्छे से क्रम से जमा लिए। उसके बाद उसे दिक्कत हो रही थी। साहिल ने उसकी मदद की तो उसने 50 तक जमा लिए।

प्रमिला अन्य बच्चों को इमली के बीज से छिपन-छिपाई वाला खेल खिला रही थी और साथ ही अंक कार्ड जमवाती रही। आज बच्चों की उपस्थिति 5 थी। 3-4 बच्चे कुछ समय के लिए आए और फिर गुल्ली तोड़ने चले गए।

छुट्टी के बाद प्रमिला के साथ अगले दिन की प्लानिंग की - अनियमित बच्चों के घर-घर संपर्क करना, पौधों में पानी डालना, उनका अवलोकन करना, पुस्तकालय की किताबों से कहानी सुनाना व शब्द चित्र कार्डों से कहानी बनाना।

20 जून 2019

आज गोमती नहीं आई। संपर्क के दौरान उसकी मम्मी ने बताया की वह स्कूल का बोलकर गई है लेकिन वह केन्द्र में नहीं आई। उसकी सहेली ने बताया कि वह गुल्ली तोड़ने गई है।

21 जून 2019

आज गोमती पूरे समय उपस्थित रही। वह दूसरे बच्चों की तरह स्वतंत्र चित्र बना रही थी।

आज एक ही गतिविधि हो पायी। पालक बैठक के लिए गाँव में संपर्क करना था। बहुत प्रयास करने के बाद भी आज पालक बैठक नहीं हो सकी क्योंकि गाँव के पास डेम के कामों का पेमेंट मिलने वाला था तो सभी लोग वहाँ चले गए।

24 जून 2019

मैं जब पहुँचा उस समय गोमती केन्द्र में नहीं आई थी। उसके घर गए तो वह सो रही थी। उसकी मम्मी ने उसे जगाने की कोशिश की लेकिन वह नहीं जागी। उसकी मम्मी ने कहा की थोड़ी देर बाद भेजती हूँ। कुछ समय के बाद वह केन्द्र में आई। आज केन्द्र संचालिका को केन्द्र में आते समय चाबी नहीं मिल पाई। वह कोरे कागज, मोमकलर, पेन्सिल के पैकेट साथ लेकर आई थी। सामने वाले घर से चटाई माँगकर बुकलेट बनाने की तैयारी की। सभी बच्चों ने स्वतंत्र चित्र बनाए और उनमें रंग भरा। गोमती ने एक चित्र बनाया। और उसमें रंग भरा। आज काम करने में उसका मन नहीं लग रहा था। पानी पीने चली गई। काफी समय के बाद लौटी और मैदानी खेल चीलम-चील में शामिल रही। खेल में उसे बहुत मज़ा आ रहा था।

इस खेल के बाद सभी बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर लकड़ी के टुकड़े की चम्मच और धूल यानि दाल-चावल का खाना परोसा गया। सभी ने खाया। इसके बाद साहिल ने सभी से चम्मच माँगकर स्कूल के पीछे छिपा दिया। सभी को चम्मच ढूँढ़ कर लाना था। कुछ बच्चे लेकर आए कुछ को नहीं मिले। छुट्टी के समय सभी बच्चों को बताया कि उस दिन से उन्हे प्रतिदिन स्कूल में भी आना है।

25 जून 2019 आज मैं अस्वस्थ था। प्रमिला ने बताया कि आज गोमती केन्द्र में आई थी।

26 जून 2019

आज गोमती पूरे समय उपस्थित रही। पहले तो उसने 0 से 9 तक के अंक कार्ड को जमाने का काम किया। उसके बाद वह उसकी सहेलियों (नीतू, वंदना) के साथ अंदर के कमरे में जाकर कुर्सी पर बैठ गई। मैंने पूछा कि "यहाँ पर क्या कर रहे हो?" तो उन्होंने बताया, "हम लोग यहाँ पर झुट्टू-झुट्टू सो रहे हैं।" कुछ समय के बाद वापस आकर गोमती बोर्ड पर लिखे सवालों को कॉपी में करने की कोशिश कर रही थी। प्रमिला उनकी मदद कर रही थी। छुट्टी के समय गोमती से मैंने कहा की खाना खाकर स्कूल में आना। उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने उसे समझाया की रोज़ दोनों समय (केन्द्र व स्कूल) में आना है।

बच्चों की छुट्टी के बाद मैंने प्रमिला से चर्चा की कि गोमती को 20 तक की संख्या पहचान की समझ है। 0 से 9 तक में वह बोर गई थी इसलिए शायद वह अंदर कमरे में जाकर बैठ गई थी। हमें बच्चों के स्तर के अनुसार प्लानिंग व काम देने की ज़रूरत है। प्रमिला को भी सुझाव अच्छा लगा।

27 जून 2019

आज 17 बच्चे पूरे समय उपस्थित रहे और गोमती भी। प्रमिला ने बोर्ड पर गुणा व जोड़ वाले सवाल लिखे थे। गोमती उसे कॉपी में हल करने का प्रयास कर रही थी। प्रमिला उसकी मदद कर रही थी।

जब कुछ बच्चे पानी पीने के लिए गए थे उसी समय प्रमिला कुछ बच्चों के साथ शब्द चित्र कार्डों में चित्रों को छिपाकर नाम दिखाकर पूछ रही थी, "क्या लिखा है?" कुछ बच्चे सही-सही नाम बता पा रहे थे। कुछ नहीं बता पा रहे थे। जो नहीं बता पा रहे थे, प्रमिला उनकी मदद कर रही थी। गोमती अलग बैठी थी। मैंने उससे कहा कि तुम भी वहाँ पर बैठो तो वह कुछ समय के लिए जाकर बैठ गई। पर उसका मन नहीं लग रहा था। मैंने पूछा कि क्या हुआ? उसने कहा भूख लग रही है। मैंने कहा कि एक खेल-खेलते हैं। उसके बाद छुट्टी कर देंगे। वह खुश हो गई।

सवाल वाली कॉपी रखकर वह पानी पीने चली गई। वापस आकर बर्फ-पानी वाले खेल में शामिल रही। उसे बहुत मज़ा आ रहा था।

1 जुलाई 2019

आज गोमती आई थी। जब मैं पहुँचा उस समय वंदना और गोमती स्कूल के सामने साथ में बैठी थीं। मेरे से गोमती ने कहा, “आज मैम नहीं आई। क्यों नहीं आई?” मैंने कहा, “मुझे नहीं पता क्यों नहीं आई?” वह बोली, ‘’उनको फोन लगाओ।” तो मैंने फोन लगाया लेकिन उनका फोन बंद था। मैं उनके पास बैठ गया।

गोमती ने मुझसे पूछा, “आप रोज़ शाहपुर से आते हो?” मैंने कहा “हाँ, मैं रोज़ शाहपुर से आता हूँ।” उसने पूछा, “यह गाड़ी (स्कूटी) आपकी है?” मैंने कहा, “ऑफिस की है”। फिर वह बोली, “आपके पास गाड़ी नहीं है।‘’ वहाँ रखी एक मोटरसाइकिल को दिखाते हुए मैंने कहा, “ऐसी वाली है।‘’ फिर उसने पूछा, ‘’आपका घर ईंट का है या कच्चा है?” मैंने कहा “जैसा आपका घर है, वैसा ही है।” उसने कहा, “मेरा घर तो कच्चा है।” मैंने कहा, “अभी तुम्हारे नए घर के जैसा है।” वंदना बोली, “सरपंच ने कहा है, मेरा घर भी पक्का बनने वाला है।”

इसके बाद वंदना और गोमती गेंदे के फूल के पौधे लाए। उसी समय कुछ बच्चे सब्जी-लौकी, गिलकी, करेला के पौधे लेकर आए। सभी ने मिलकर स्कूल की बाउंड्री के पास कतार से गड्ढा खोदकर पौधे लगाने का काम किया। नीचे की ज़मीन सूखी होने के कारण उसमें पानी डाला।

पौध-रोपण के बाद मैंने सभी बच्चों को कहा कि वे घर जाकर नहाकर, खाना खाकर स्कूल आएँ। गोमती और वंदना ने कहा कि वे तो नहाकर आई हैं। और वे रोज़ नहाती हैं। जाते समय गोमती ने मुझसे कहा कि उसे स्कूल में अच्छा नहीं लगता। वह बोली, ‘’मेरा स्कूल में आने को मन नहीं होता।” मैंने पूछा, “ऐसा क्यों?” वह बोली, ‘’सर डांटते हैं। बात नहीं करने देते, खेलने भी नहीं देते।” वंदना ने कहा, “मेरे को सुबह वाले स्कूल में मज़ा आता है। खेलने के लिए बहुत सारी चीज़ें हैं। आप और खिलौने लाना।”

मैंने दोनों को समझाते हुए कहा, ‘’सुबह वाले केन्द्र में और स्कूल में, दोनो में आना है। हम लोग सर से बात करेंगे तो वह आप लोगों को नहीं डाँटेंगे। वंदना ने कहा, “कल टीवी (लैपटॉप) लेकर आना। हम को फोटो देखना है। मैंने कहा “बारिश के कारण लेकर नहीं आया।” गोमती ने कहा, “पन्नी में रख के लाना।”

5 जुलाई 2019

आज मैं केन्द्र पहूँचा तो दो-तीन बच्चे उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि प्रमिला बच्चों को बुलाने के लिए गाँव में गई है। कुछ समय के बाद 18 बच्चे उपस्थित हुए। आज गोमती पूरे समय उपस्थित रही। वह छोटी किताब (गणित वाली) की संख्याओं की आउट लाईन के अंदर मोम कलर से रंग भर रही थी। कलर करने के बाद गोमती वह किताब मेरे पास लेकर आई तो मैंने उससे आकृतियों की संख्या के बारे में पूछा, “कितनी-कितनी है?” पर वह बता नहीं पा रही थी।

मैंने उसे दो-तीन पेज की आकृतियों को गिनकर बताया तो वह भी गिन-गिनकर उनमें रंग भरने लगी।

आज मौसम के बारे में चर्चा की तो सभी ने बताया कि रोज़ थोड़ा-थोड़ा पानी गिर रहा है। आज भी रिमझिम बारिश हो रही थी। बच्चों को बहुत मज़ा आ रहा है। बहुत दिनों से धूप नहीं निकली थी, पर बच्चे बार-बार मैदान में जाने के लिए कह रहे थे। बहुत मुश्किल से रोककर उनसे पूछा कि जब पानी गिरता है तो क्या-क्या खाने का मन होता है? बच्चों ने बताया कि उन्हें पकौड़े, भुने हुए चने, मक्का, और मूँगफली खाने का मन होता है। इसके बाद बच्चों ने बताया, “हम लोगों ने उस दिन गिलकी, करेला, लौकी के पौधे लगाए थे। लेकिन सर ने सब उखड़वा दिए। अब क्या लगाएँगें?” मैंने कहा , “गेंदा, गुलाब, मोगरा, आँवला, नीम, आम, जाम, नींबू, गुलमोहर के पौधे लगाएंगे।” तो उन्होंने पूछा, “यह कहाँ से लाएँगे?” मैंने कहा, “इसकी व्यवस्था करते हैं।”

11 जुलाई 2019

आज गोमती उपस्थित रही। आते ही वह प्रमिला के पास बैठकर बोर्ड पर लिखे जोड़ के सवाल कॉपी में करने लगी। प्रमिला उसकी मदद कर रही थी। उन्हीं सवालों को कंकड़ व अंक कार्डों से बिन्दी गिनकर करवाया तो वह अच्छे से कर पा रही थी। इसके बाद गोमती खेल में शामिल नहीं हुई। भूख लग रही बोलकर घर चली गई।

12 जुलाई 2019

आज पालक बैठक करने के लिए पालकों से घर-घर जाकर संपर्क किया। 9:30 बजे से एक मोहल्ले में बैठक की जिसमें 13 महिलाएँ शामिल हुईं। पालक बैठक होने के कारण आज बच्चों के साथ काम नहीं हो पाया।

पालक बैठक में माताओं को बच्चों की पढ़ाई की जानकारी, केन्द्र व स्कूल की जानकारी दी गई। उन्हें बताया कि गर्मी की छुट्टियों में भी केन्द्र संचालित रहा है। केंद्र में बच्चों के काम के बारे में विस्तृत चर्चा की और लैपटॉप पर 1 मई से लेकर अब तक के फोटो दिखाए। अपने-अपने बच्चों के फोटो देखकर सभी माताएँ बहुत खुश हो रही थीं। फोटो में बच्चे जो गतिविधि कर रहे थे, उससे वे क्या-क्या सीखते हैं, इस पर भी बीच-बीच में चर्चा की गई।

इसके बाद बच्चों की नियमितता और प्रतिदिन बच्चों को केन्द्र और स्कूल भेजना क्यों ज़रूरी है पर चर्चा की गई। यह भी बात रखी गई कि वे अपने बच्चों के साथ अपने आस-

पड़ोस के बच्चों को भी केन्द्र व स्कूल में नियमित भेजने का प्रयास कर सकते हैं।

5वीं पास सभी बच्चों का मिडिल स्कूल में दाखिला करवाना है। इस पर चर्चा की गई।

फिर, शिक्षा क्यों जरूरी है?आज जो शिक्षित नहीं है, उन्हें कौन-कौन सी समस्याएँ हो रही है? इस पर काफी विस्तार से बात की गई। माताओं ने अपनी-अपनी समस्याएँ बताईं। तब लड़का-लड़की दोनों को ही शिक्षित करना क्यों ज़रूरी है और लड़की किस तरह से दो परिवारों का उद्धार करती है, इस पर चर्चा की गई।

अन्त में प्रति माह बैठक के बारे में चर्चा की तो सभी ने कहा कि वे ज़रूर आएँगीं। हमने सबसे कहा, "आप लोग कभी-कभी समय निकालकर केन्द्र व स्कूल में कुछ समय के लिए ज़रूर आया करो।" सभी ने आश्वासन दिया कि वे आएँगी ।

15 जुलाई 2019

आज गोमती पूरे समय उपस्थित रही। साप्ताहिक प्लानिंग के अनुसार प्रमिला ने बच्चों के दो समूह बनाए थे और दो अलग कमरों में बिठवाया था। समूह-सी में वंदना और गोमती बैठी थीं। Mathemat की गोटियों को गिनकर छेद वाली प्लेटों में रंगों के हिसाब से जमा रही थी। प्रमिला उन गोटियों से पहाड़े बनाने में मदद कर रही थी। यह सामग्री नई थी इसलिए आज इसी पर ज़्यादा समय लगा। इसके बाद गोमती अपनी सहेली के साथ मिलकर रंगोमेट्री से आकृतियाँ बना रही थी।

आज केन्द्र की छुट्टी के बाद मैं स्कूल में रुका रहा। 10:30 बजे प्रधान पाठक मनोज सर पहुँचे। दूसरे शिक्षक छुट्टी पर हैं। उन्होंने बच्चो से कमरों की साफ-सफाई करवाकर बच्चों को एक कमरे में बैठाया। हाज़िरी लेने के बाद मैंने उन्हें 1 मई से अभी तक के बच्चों के फोटो दिखाए। फोटो देखकर बहुत खुश हो रहे थे। जैसे ही कुशल का फोटो देखा तो उन्होंने कहा, ''अच्छा यह शैतान भी काम कर रहा है।'' उसके बाद गोमती, वंदना के फोटो देखकर बोले, ''ये मंदबुद्धि हैं।''

सभी फोटो देखने के बाद वह हमारे कामों की बहुत तारीफ कर रहे थे और मुझे धन्यवाद कहा। मैंने उन्हें बताया कि उक्त तीनों बच्चे गर्मी में भी आते रहे पर शादी, मेहमानी, गुल्ली के कारण नियमित नहीं रह पाए। कुशल, वंदना,

गोमती में थोड़ा अंतर तो दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा कि उन्हें गोमती और वंदना में अंतर दिख रहा है। पहले इन बच्चियों को नाम लिखना और गिनती नहीं आती थी लेकिन अब यह कर रही हैं। उन्हें लगा कि कुशल के साथ और समय लगाने की ज़रूरत है। मैंने उन्हें कहा कि हम लोग सुबह के समय प्रयास कर रहे हैं और वे स्कूल के समय कोशिश कर सकते हैं। वह बोले कि वह भी प्रयास करेंगे और फिर निवेदन किया कि हम कभी-कभी स्कूल में भी 1-2 घंटे का समय देंगे तो उन्हे मदद मिलेगी। इसके बाद उन्होंने बताया कि हाल ही में पथरौटा में एकलव्य द्वारा उनका प्रशिक्षण हुआ था जिसमें कई अच्छी गतिविधियाँ करवाई गई थीं। उनकी इच्छा थी कि शिक्षा प्रोत्साहन केंद्र की पेटी में रखी सामग्री उनके शिक्षक भी उपयोग कर सकें। मैंने स्पष्ट किया कि यह सामग्री सभी के उपयोग के लिए है।

17 जुलाई 2019

आज दो ही बच्चे आए थे। उन्हीं बच्चों के साथ गाँव में संपर्क किया तो पालक बोल रहे थे कि पिछली रात चंद्रग्रहण था इसलिए वे बच्चों को नहलाकर भेजेंगे। लगभग 8 बजे तक 9 बच्चे उपस्थित हुए। गोमती आते ही mathemat की शीट पर गोटियाँ गिनकर जमाने लगी। उसके बाद बोर्ड पर लिखे जोड़ के सवाल को कॉपी में हल कर रही थी। एक अंक वाले सवालों को वह अच्छे से कर पा रही थी लेकिन हासिल वाले में उसे दिक्कत हो रही थी। प्रमिला उसकी मदद कर रही थी। मदद करने पर कोशिश कर रही थी।

18 जुलाई 2019

आज गोमती पूरे समय उपस्थित रही। आज भी वह बोर्ड पर लिखे जोड़ के सवालों को कॉपी में हल कर रही थी। करने के बाद वह मुझे दिखाती थी। कहीं गलती होती थी तो मैं उसकी मदद करता। उसे बहुत मज़ा आ रहा था। आज वह जोड़ के साथ-साथ घटाने के सवाल भी कर रही थी। इसके बाद प्रमिला ने जोड़-घटाव के मौखिक सवाल बनाकर पूछे। सभी बच्चे और गोमती भी अच्छे से सही-सही जवाब दे रहे थे। मैंने पुस्तकालय की किताब से छोटे-छोटे वाक्य पढ़ने की तैयारी की लेकिन गोमती ने मना कर दिया। मेरे से बोल रही थी कि वह तो सवाल ही सवाल करेगी तो मैंने उसकी कॉपी में एक अंक के जोड़-घटाव के सवाल लिखकर दे दिए। वह मेरे पास ही बैठकर सवालों को हल कर रही थी। मैंने देखा कि वह बोर्ड पर लाईन खींच कर सही कर लेती है लेकिन कॉपी में सही नहीं कर पा रही है। कॉपी में हल करने का बार-बार प्रयास किया तो कुछ सवाल सही किए। मुझे लगा कि अभ्यास की ज़रूरत है।

आज भी बच्चें दो समूह में बैठे थे। समूह-C में 8 बच्चें और समूह-B में 6 बच्चे कुल-14 बच्चें उपस्थित रहे।

22 जुलाई 2019

आज गोमती नहीं आई थी।

23 जुलाई 2019

आज गोमती लेट आई थी। आते ही बोर्ड पर लिखे जोड़ के सवाल कॉपी में करने लगी। सवाल करते समय वह इमली के बीजों का उपयोग कर रही थी।

इसके बाद प्रमिला ने पुस्तकालय से पक्की दोस्ती नामक कहानी हाव-भाव के साथ सुनाई। प्रमिला, चित्रों पर चर्चा व सवाल-जवाब कर रही थी। बच्चों को बहुत मज़ा आ रहा था। बच्चे एक और कहानी सुनाने का कह रहे थे तो प्रमिला ने निराली पोषाक नामक कहानी सुनाई। बच्चों को बहुत आनंद आया। कुशल के पापा और मैं बाहर बैठकर चर्चा भी कर रहे थे और कहानी भी सुन रहे थे। इसी समय गाँव के सरपंच भी वहाँ पर पहुँचे और वह भी कहानी सुनने लगे। कुशल के पापा ने सरपंच से कहा, “यहाँ पर बहुत अच्छा काम होता है। मैंने अंदर जाकर केन्द्र देखा और फोटो भी देखे।”

सरपंच बोले, ‘“मैं तो शुरु से ही एकलव्य संस्था के कामों को जानता हूँ। अच्छा काम कर रहे हैं। ऐसा स्कूल में भी हो सके तो बहुत अच्छा होगा।”

24 जुलाई 2019

आज गोमती नहीं आई।

29 जुलाई 2019

आज गोमती बहुत लेट आई और आते ही अपने मन से जोड़ के सवाल वाला कार्ड उठाकर कॉपी में हल करने लगी। एक-एक सवाल को हल करके मुझे दिखा रही थी। जो सवाल गलत होता था, कंकड़ों के माध्यम से मैं उसकी मदद करता था। सवालों को हल करने के बाद मैंने लायब्रेरी की पुस्तकों के चित्र दिखाते हुए छोटे-छोटे वाक्य पढ़वाने की कोशिश की लेकिन उसने मना कर दिया। वह गणित के सवाल हल करने लगी।

3. वंदना

वंदना उइके वीरगुहारी की रहने वाली है और वह कक्षा दूसरी में पढ़ती है। वंदना एक आदिवासी परिवार से आती है जिनके पास आधा एकड़ भूमि है और माता पिता मज़दूरी करते हैं। उसके परिवार की जानकारी इस प्रकार है।

क्रं	सदस्यों के नाम	वंदना से संबंध	शैक्षणिक योग्यता	उम्र
1	तुलसी उइके	पिता	साक्षर	लगभग 32 वर्ष
2	कलवंती	माँ	साक्षर	लगभग-2 8 वर्ष
3	वंदना	स्वयं	दूसरी में अध्यनरत	6 वर्ष
4	संजना	बहन	आँगनवाड़ी	3 वर्ष
5	चतन उइके	दादाजी	निरक्षर	75 वर्ष

केन्द्र संचालिका, प्रमिला के अनुसार केन्द्र में वंदना की उपस्थिति ठीक है। जुलाई 2018 से अक्टूबर 2018 तक शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र कुल 86 दिन लगा जिसमें वंदना 48 दिन (56 प्रतिशत) उपस्थिति रही। नवम्बर 2018 से अप्रैल 2019 तक केन्द्र कुल 127 दिन लगा और वंदना 80 दिन (63 प्रतिशत) उपस्थिति रही। वंदना निर्देश देने पर एक बार तो अच्छे से काम करती है। लेकिन बाद में वह मनमर्ज़ी से काम करती है। समूह में काम नहीं करती। अलग-थलग रहना उसे अच्छा लगता है। किसी से बातचीत नहीं करती है। कभी-कभी थोड़ा-सा बोलती है। उसे कोई शारीरिक समस्या नहीं है। मनोज सर ने वंदना के बारे में कुछ विशेष नहीं कहा। बस इतना ही कि वह पढ़ाई में कमज़ोर है। इस केस स्टडी हेतु वंदना का सतत अवलोकन लगभग तीन माह तक किया गया है – 1 मई 2019 से 29 जलाई 2019।

1 मई 2019 आज की उपस्थिति 10 थी पर वंदना केन्द्र में नहीं आई।

2 मई 2019

आज वंदना केन्द्र में समय पर आई और पुरे समय उपस्थित रही।

मेरे लिए आज वंदना का पहला दिन था। शुरुआत में मैंने उससे दोस्ती और बात करने की कोशिश की लेकिन वह ज़्यादा नहीं बोली। एकाध घंटे के बाद जब मैंने उससे मम्मी, पापा का नाम पूछा तो उसने अच्छे से बताया। फिर मैंने पूछा कि आज क्या-क्या खाया तो उसने बताया कि रात की रोटी और दाल खाई है। आज वंदना समुह में झालर बनाने का काम अच्छे से कर रही थी। उसने बाल्टी-बॉल का खेल भी खेला। कितनी बॉल अंदर गई कितनी बाहर गई, उसे अच्छे से गिना और सही-सही गिना। उसे बहुत मज़ा आ रहा था। छुट्टी के समय सभी बच्चों को अगले दिन आने के लिए और अपने-अपने दोस्तों, सहेलियों को साथ लाने के लिए कहा गया।

3 मई 2019

आज वंदना बहुत लेट आई। उसकी सहेली उसे बुलाने गई थी। उसकी मम्मी उसे नहला रही थी। मम्मी ने कहा कि वह आज नहीं आएगी, कल से आएगी, लेकिन वह ज़रूर आएगी। जब वह केन्द्र में पहुँची तब मैं सभी बच्चों को शब्द चित्र कार्ड दिखाकर उस पर चर्चा कर रहा था। वह चर्चा में शामिल रही। शब्द चित्र कार्ड को देखकर वह उनके बारे में अच्छे से बता रही थी।

छुट्टी के बाद संचालिका, बच्चे और मैं वंदना के घर उसकी मम्मी, पापा से मिलने गए। लेकिन वे नहीं मिले। वंदना के

दादा जी मिले। वह वंदना की छोटी बहन को खिला रहे थे। उन्ही से वंदना को प्रतिदिन केन्द्र में भेजने के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि ज़रूर भेजेंगे। वह कह रहे थे कि वैसे वह रोज़ जाती है लेकिन छुट्टी रहने के कारण फिर बंद कर देती है। उनकी बातों से मुझे यह समझ आया कि केन्द्र दो दिन लगातार बंद रहने के कारण उसका केंद्र आने का क्रम टूट जाता होगा।

7 मई 2019

आज वंदना केन्द्र में नहीं आई। सहेली से पता चला कि वह घर में नहीं है।

8-16 मई 2019

वंदना नहीं आई। उसके घर गए तो पता चला कि वह नानी के घर गई है। उसके पापा भी उसी गाँव में काम करने के लिए गए हैं। वापस आने का कोई पक्का नहीं है।

17 मई 2019

आज जब मैं केन्द्र पहुँचा तो केवल वंदना ही थी और समीर पौधों के लिए पानी लेने गया था। हम बच्चों को बुलाने गए तो पाँच बच्चे और आ गए। सभी बच्चों ने पौधे वाले दोने बाहर धूप में रखे। उसके बाद जिन बच्चों ने बीज बोए थे उन्होंने अपने-अपने दोने में पानी डाला। अपने पौधों को देख वे बहुत खुश हो रहे थे। प्रतिदिन गिलहरी पौधों को नुकसान पहुँचाती है, इस कारण दुखी भी थे। वंदना ने पौधों में पानी डाला और सभी पौधों को अच्छे से देख रही थी। क्योंकि वह पिछले 3-4 दिनों से नहीं आ रही थी तो उसको यह बिल्कुल नया लग रहा था।

इसके बाद बच्चे गोल घेरे में बैठकर पुराने अखबारों से 3-4 तरह की टोपी बनाने लगे। टोपी बनाने में मेरे बेटे हर्षित ने बहुत सहयोग किया। कल रात को उसने 20 अखबार छाँटकर रख लिए थे। वंदना आज पूरे समय शामिल रही और निर्देशों को अच्छे से समझते हुए उसने बहुत अच्छी टोपी बनाई, उसे पहना और साथ घर लेकर गई। वह बहुत खुश थी।

इसके बाद मैं कुछ इमली के बीज लाया और सभी बच्चों के सामने एक-एक करके 10 बीज गिनकर रखे। उनमें कुछ बीज मैं एक हाथ से छिपा लेता था और कुछ बीज बाहर रहते थे। बच्चों से पूछता कि मेरे हाथ के भीतर कितने बीज हैं। पहली बार तो उन्हें समझने में थोड़ा समय लगा लेकिन एक-दो राउंड के बाद सभी बच्चे अच्छे से बता पा रहे थे। मैं हर बार पूछता कि मेरे हाथ में इतने ही बीज क्यों होंगे?

बच्चे बहुत अच्छे से जवाब देते थे कि 10 में से बाहर इतने हैं तो हाथ के भीतर इतने ही होंगे। इस गतिविधि में बच्चों को बहुत मज़ा आ रहा था।

वंदना इस गतिविधि में पूरे समय शामिल रही और वह हर बार सही-सही जवाब देती थी। इसके बाद मैंने 1 से 10 तक के अंक कार्डों को मिक्स कर दिए और बारी-बारी से दो बच्चों को क्रम में जमाने के लिए कहा तो बच्चों ने जमा दिए। 6 और 9 वाले कार्ड को समझने और जमाने में दिक्कत हो रही थी। मैंने एक बार सभी को बताया कि पीछे बिन्दी बनी है उसे गिनकर तय कर सकते हो कि 6 वाला कौन-सा है और 9 वाला कौनसा? इसमें बच्चे एक दूसरे की मदद भी कर रहे थे।

मैंने कार्डों को मिक्स करके वंदना से कहा कि कार्ड जमाओ तो उसने जमा दिए लेकिन क्रम में नहीं जमाए। प्रमिला ने उससे कहा कि गिनती जैसे क्रम में जमाओ तो उसने अच्छे से जमा दिए लेकिन उसे भी 6 और 9 वाले कार्ड में दिक्कत हो रही थी। उसकी सहेली ने उसकी थोड़ी मदद की तो उसने बिल्कुल सही क्रम में जमा दिए। सबने ताली बजाई तो वह बहुत खुश हुई। यह गतिविधि करवाते समय मुझे समझ में आया की मैंने निर्देश गलत दिया था। मैंने कार्ड जमाने का कहा था, क्रम में जमाने को नहीं कहा था। गलती मेरी थी, वंदना की नहीं।

इसके बाद सभी बच्चों ने सामग्री को पेटी में व्यवस्थित रखने का काम किया। बाहर रखे पौधों के दोनों को अंदर रखे। छुट्टी के समय सभी को बताया कि कल हमारी नयापुरा में मीटिंग है और परसों रविवार है। दो दिन की छुट्टी है। सभी को सोमवार को आना है।

23 मई 2019

आज वंदना बहुत लेट आई थी। वह जब पहुँची तब हम लैपटॉप पर कविता कहानी देख रहे थे। वह भी मज़े से देखने लगी। बाकि के बच्चे पानी पीने गए लेकिन वह नहीं गई। कह रही थी कि मुझे भी फोटो दिखाओ तो मैंने लैपटॉप में उसे फोटो दिखाए। वह बहुत खुश हुई।

24 मई 2019

आज 7 बच्चे आए थे जिसमें वंदना भी थी। वह रंगीन कागज़ों की पट्टियों से झालर बना रही थी। पहले जो झालर बनाई थी उसका घेरा बड़ा था, आज जो बना रहे थी उसका घेरा छोटा था। इसमें ज़्यादा मेहनत लग रही थी। दूसरे सभी बच्चे रंगोमेट्री से खेल रहे थे लेकिन वंदना झालर बनाने में ही व्यस्त रही। उसे इस काम में बहुत मज़ा आ रहा था। झालर बनने के बाद उसने प्रमिला के साथ कमरे में झालर लगाया। टायर पर भी बहुत अच्छे से और आराम से चल रही थी। छुट्टी होने तक वंदना रुकी रही।

28 मई 2019

आज वंदना ने स्वतंत्र चित्र बनाकर उसमें मोम कलर से रंग भरा, अपना नाम व आज की तारीख दर्ज की और उसको

फाईल में लगाया। फिर पानी पीने आँगनवाड़ी वाले हेंडपंप गई। उधर से आकर उसने मुझसे कहा कि उसे भूख लगी है और वह जा रही है।

29 मई 2019

आज कुल 16 बच्चे उपस्थित रहे। वंदना आधे घंटे लेट आई। वह हमेशा उसकी छोटी बहन को साथ लेकर आती है। आज आते ही वह पुस्तकालय की किताबों को देख रही थी। सबसे पहले उसने छुपन-छुपाई वाली किताब उठाई और उसके चित्रों को देखती रही। उसकी छोटी बहन को चित्र दिखाकर उससे बात करती जा रही थी। कुछ समय के बाद वह रंगोमेट्री से आकृति बनाने का काम कर रही थी।

इसके बाद उसने चिड़ियाघर का नाई वाली किताब उठाई और केन्द्र संचालिका प्रमिला के पास गई। प्रमिला उसे चित्र दिखाकर उस पर चर्चा करती रही। उसे बहुत मज़ा आ रहा था। फिर वह मेरे पास आई और चित्र दिखाकर मुझे समझा रही थी। आज गोमती के घर जाने का प्लान था। लेकिन उसके घर कोई नहीं था इसलिए सोचा कि आज वंदना के घर चलते हैं। वंदना से पूछा तो उसने बताया कि उसके पापा बोरिंग मशीन में काम करने गाँव से बाहर गए हैं और उसकी मम्मी गाँव में काम करने के लिए गई है। तो घर जाने का प्लान केन्सिल किया।

30 मई 2019

आज वंदना नहीं आई।

04 जून 2019

आज वंदना पूरे समय उपस्थित रही। आज बच्चे पत्तियाँ ले कर आए थे। दो-दो की टोली बनाकर चॉक से एक गोल घेरा बनाया और उसमें कुछ पत्तियों रख दीं। निश्चित दूरी पर चॉक से अलग-अलग दो और गोल घेरे बनाए जिसमें एक एक बच्चे को खड़ा किया गया। रेडी बोलते ही बच्चों को बड़े घेरे में से एक बार में एक पत्ती उठानी थी, स्टॉप बोलने पर रुकना था और अपने घेरे के पास पत्ती को एकत्र करना था। फिर किसने कितनी पत्ती उठाई उसे गिनना होता था।यह गतिविधि बारी-बारी से सभी बच्चों ने की। उन्हें बहुत मज़ा आ रहा था। खेल की शुरुआत गोमती और वंदना ने की। पहली बार गोमती 23 पत्तियाँ उठाकर लाई और वंदना 16 पत्तियाँ। इसके बाद दूसरे बच्चे यह खेल खेलते रहे। थोड़ी देर के बाद वंदना और गोमती ने दोबारा यह खेल खेला। इस बार गोमती ने 27 पत्तियाँ उठाईं और वंदना ने 22 पत्तियाँ।

बीच-बीच में वंदना लायब्रेरी की किताबों के चित्र देख रही थी। प्रमिला संदीप को लायब्रेरी की किताब से चित्र दिखाकर उस पर चर्चा कर रही थी। कुछ समय वंदना वहाँ जाकर बैठती थी, चित्र देखती थी। थोड़ी देर बाद दूसरे समूह में जाकर बैठती थी। आज वंदना समूह में झालर बनाने का काम भी अच्छे से कर रही थी। उसने बाल्टी बॉल का खेल खेला। कितनी बॉल अंदर गई कितनी बाहर गई, उसे अच्छे से गिना और सही-सही गिना। उसे बहुत मज़ा आ रहा था। छुट्टी के समय सभी बच्चों को अगले दिन आने के लिए कहा गया और साथ में अपने-अपने दोस्तों, सहेलियों को साथ लाने को भी। सभी ने हाँ कहा।

5 जून 2019

आज वंदना नहीं आई थी। उसके घर गए तो दादा जी ने बताया कि वह मेहमानी गई है।

6,7,10,11,12,17,18, 20 और 21 जून 2019

इन सभी तारीखों पर वंदना नहीं आई। उसकी मम्मी से बीच में मिले और उसे मेहमानी से वापस बुलाने के लिए कहा तो उन्होंने कहा कि उन्होंने खबर भेज दी है पर वहाँ से लाने वाला कोई नहीं मिल रहा है। वह और कोशिश करेंगी। उनसे घर परिवार, मौसम की बातें करते हुए हमने बताया कि वंदना केन्द्र में बहुत अच्छा काम करती है। वह हंसने लगीं। उन्होंने प्रमिला को बताया कि जब वंदना पेट में थी उस समय उनकी तबीयत बहुत ज़्यादा खराब हो गई थी। उन्हें तेज़ पीलिया हो गया था। जड़ी-बुटी ली थी व झड़वाया भी था। बहुत दिनों के बाद ठीक हुईं। वंदना का जन्म सात माह में ही हो गया था। उन्होंने उसे जैसे-तैसे पाला है। उन्हें तो उम्मीद ही नहीं थी कि वह बच पाएगी लेकिन अभी ठीक है। शरीर से कमज़ोर है। घर में उनके संग ज़्यादा बातचीत नहीं करती है। घर के कामों में मदद करवाती है। छोटी बहन, संजना को खिलाती है और उसका अच्छे से ध्यान रखती है।

मैंने कहा कि मेरे से, प्रमिला से और दूसरे बच्चों से तो वंदना बहुत बात करती है। मैंने उन्हें समय निकाल कर केन्द्र में ज़रूर आने को कहा। उन्होंने कहा कि सुबह वाले स्कूल में जाने के लिए वह मना नहीं करती। कभी-कभी घर के कामों के कारण वे उसे रोकती हैं तो वह नहीं मानती और केंद्र चली जाती है। उन्होंने बताया कि उन लोगो की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। मेहनत-मज़दूरी करके किसी तरह से घर चला रहे हैं। पहले तो काम मिल जाता था लेकिन अब तो काम भी नहीं मिलता है। आज उन्हें समूह की मीटिंग में जाना था इसलिए इतनी ही बातचीत हो पाई।

24 जून 2019

आज 16 बच्चे उपस्थित रहे और वंदना भी पूरे समय उपस्थित रही। पहले एक बार आकर उसने हमें बताया कि वह नानी के घर से आ गई है। संजना को लेकर कुछ देर में आती है।

दोबारा आने के बाद बुकलेट की तैयारी के लिए पेंसिल से चित्र बनाकर उसमें रंग भर रही थी। लंबे समय के बाद आज

आई तो उसे सब कुछ नया-नया लग रहा था। इसके बाद वह मैदानी खेलों में शामिल रही। मैंने पूछा कि अब नानी के घर कब जाओगी तो उसने कहा कि अब बहुत दिनों के बाद जाऊँगी और जल्दी आ जाऊँगी।

25 जून 2019

मेरा स्वास्थ्य खराब होने के कारण मैं आज अवकाश पर रहा। प्रमिला से फोन कर पूछा तो उन्होंने बताया कि आज वंदना आई है।

26 जून 2019

आज वंदना आई थी। सबसे पहले उसने 0 से 9 तक के अंक कार्ड को क्रम से जमाने का काम किया। सही-सही जमाया। इसके बाद प्रमिला ने बोर्ड पर जोड़ के कुछ सवाल लिखे उसे कॉपी में करने का निर्देश दिया। वंदना प्रयास कर रही थी। जहाँ दिक्कत हो रही थी वहाँ पर प्रमिला उसकी मदद कर रही थी। इसके बाद सभी बच्चे पानी पीने गए। लौटने पर बच्चे मैदान में इकट्ठा हुए बारिश के पानी में खेलने लगे। फिर उन्हे भूख लगी तो उन्होंने कहा कि छुट्टी कर दो। सब घर चले गए।

27 जून 2019

आज 17 बच्चे उपस्थित रहे और वंदना पूरे समय उपस्थित रही। प्रमिला ने बोर्ड पर सवाल लिखे थे। उसे वह हल करने का प्रयास कर रही थी। प्रमिला उसे अपने पास बैठाकर मदद कर रही थी।

कुछ बच्चे पानी पीने गए तो वंदना भी गई। उस समय प्रमिला शब्द चित्र कार्डों में चित्रों को छिपाकर नाम कार्ड दिखाकर क्या लिखा है यह पूछ रही थी। कुछ बच्चे सही-सही नाम बता पा रहे थे तो कुछ नहीं बता पा रहे थे। जो नहीं बता पा रहे थे, प्रमिला उनकी मदद कर रही थी। वंदना इस गतिविधि में शामिल नहीं हो पाई। पानी पीकर वह बहुत लेट आई और बर्फ पानी वाले खेल में शामिल रही। पानी, पानी, पानी बोलने पर बच्चे कमरे में घूमते रहे, जैसे ही बर्फ बोलते थे, बच्चे जिस हालत में होते थे, उन्हें वैसे ही अपने स्थान पर मूर्ति बनकर खड़े होना होता था।बच्चों को बहुत मज़ा आ रहा था। वंदना बहुत खुश थी।

28 जून 2019

आज सुबह बहुत तेज़ बारिश और धार नदी के रपटे पर पानी होने के कारण मैं केन्द्र में नहीं जा सका।

1 जुलाई 2019

आज वंदना आई थी। जब मैं पहुँचा वंदना और गोमती स्कूल के सामने बैठी थीं। उनसे कुछ देर बात की। फिर जब बाकी बच्चे आ गए तो मौसम के बारे में चर्चा की। सभी बच्चों ने कहा कि बादल हैं और रोज़ होते हैं लेकिन पानी नहीं गिर रहा है। वंदना ने कहा की पानी गिरता है तो बहुत मज़ा आता है। मैंने पूछा मज़ा क्यों आता है? तो वंदना ने कहा, "जब पानी गिरता है, तो मैं नहाती हूँ। उससे घमौरी, फुन्सी सब ठीक हो जाती है।" गोमती ने कहा, "मैं भी खूब नहाती हूँ। मेरे को भी बहुत मज़ा आता है। अभी बादल होने से गर्मी नहीं लग रही है। अब ठंडा लग रहा है।"

इसके बाद वंदना और गोमती गेंदे के फूल के पौधे लाए। उसी समय कुछ बच्चे लौकी, गिलकी, करेला के पौधे लेकर आए। सभी ने मिलकर स्कूल की बाउंड्री के पास कतार से गड्डा खोदकर पौधे लगाए। ज़मीन सूखी होने के कारण उसमें पानी डाला। इसके बाद मैंने सभी बच्चों को कहा कि वे घर जाकर नहाकर, खाना खाकर स्कूल आएँ। गोमती और वंदना बोलीं कि वे तो रोज़ नहाकर आती हैं।

जाते समय गोमती ने मुझसे कहा कि स्कूल में अच्छा नहीं लगता। मेरा मन स्कूल में आने को नहीं होता। मैंने पूछा कि ऐसा क्यों? वह बोली, "सर डाँटते हैं। बात नहीं करने देते, खेलने भी नहीं देते।"

वंदना ने कहा, ''मेरे को सुबह वाले स्कूल में मज़ा आता है। खेलने के लिए बहुत सारी चीज़ें हैं। आप ढेर सारे खिलौने लाना।'' मैंने दोनो को समझाते हुए कहा, ''सुबह वाले केन्द्र में और स्कूल में भी आना है। हम लोग सर से बात करेंगे तो वह आप लोगों को नहीं डाँटेंगे। वंदना ने कहा कि कल टीवी (लैपटॉप) लेकर आना। हम को फोटो देखना है।

05 जुलाई 2019

आज वंदना केन्द्र में नहीं आई।

11 जुलाई 2019

आज वंदना बहुत लेट आई थी। आते ही वह प्रमिला के पास बैठकर बोर्ड पर लिखे जोड़ के सवाल कर रही थी। प्रमिला उसकी मदद कर रही थी। सवालों को कॉपी में करने के बाद कंकड़, अंक कार्डो से बिन्दी गिन रही थी।

कुछ बच्चों ने मिलकर कल शाम के समय स्कूल के मैदान में एक घर बनाया था। सारे बच्चे मुझे और प्रमिला को वह घर दिखाने ले गए। घर के पास बैठकर उस पर चर्चा की। बच्चों ने घर के बारे में विस्तार से बताया कि यह हमारा घर है, इसे ईंट और मिट्टी से बनाया है। इसमें दरवाजा, खिड़की लगाई है। घास मिट्टी से छत बनाई है। अब इस पर पन्नी डालना है नहीं तो बारिश में टूट जाएगी।

फिर हम सबने मिलकर कुछ खेल खेला। वंदना खेल में शामिल रही और उसके बाद वह चली गई।

12 जुलाई 2019

पालक बैठक के लिए पालकों से घर-घर जाकर संपर्क किया। बच्चों के साथ आज काम नहीं कर पाए।

15 जुलाई 2019

आज वंदना पूरे समय उपस्थित रही। Mathemat की गोटियों को गिनकर लगाने का काम कर रही थी। अलग-अलग रंगो की गोटियों को लगाकर आकृतियाँ बना रही थी।

17 जुलाई 2019

आज वंदना लेट आई पर उसके बाद वह संचालित गतिविधियों में शामिल रही। कॉपी में एक अंक के जोड़ के सवाल हल करने की कोशिश कर रही थी। कंकड से अच्छे से कर पा रही थी लेकिन कॉपी में करने में दिक्कत हो रही थी। प्रमिला उसकी मदद कर रही थी। आज भी बच्चे दो समूह में बैठे थे। आज समूह में काम करने में ज़्यादा दिक्कत नहीं हुई।

18 जुलाई 2019

आज वंदना छुट्टी के समय पहुँची। आते ही कॉपी लेकर सवाल करने लगी। तीन सवाल किए, उसमें दो सही किए। उसकी कॉपी में एक अंक के कुछ सवाल लिखकर दिए और उन्हें स्कूल में बैठकर करने के लिए कहा।

22 जुलाई 2019

आज वंदना लेट आई थी। प्रमिला ने उसे बोर्ड पर कुछ संख्याएँ लिखने को कहा जैसे कि - 5, 7, 4, 9, 3, और 8 जो कि उसने सही-सही लिखा। इसके बाद बोर्ड पर लिखे घटाने के सवालों को कॉपी में हल कर रही थी और कंकड़ से भी कर रही थी।

सवाल करने के बाद वह पहले प्रमिला को दिखाती और उसके बाद मुझे। जब प्रमिला और मैं कहते कि बिल्कूल सही है तो वह बहुत खुश होती।

इसके बाद प्रमिला ने सभी बच्चों को समूह में बिठाया और शब्द चित्र कार्ड दिखाते हुए एक एक चित्र के बारे में बच्चों से पूछती गई। वंदना भी अच्छे से बता रही थी। पहले इस गतिविधि में बच्चे कम बोलते थे, लेकिन चार-पाँच कार्ड देखने के बाद वे ज़्यादा अच्छे से और ज़्यादा चीजें बता पा रहे थे।

23 जुलाई 2019

आज भी वंदना लेट आई थी। आते ही वह अपनी कॉपी ढूँढ रही थी। उसे उसकी कॉपी नहीं मिली पर प्रमिला की मदद से मिल गई। वह बोर्ड पर लिखे सवालों को कॉपी में हल करने लगी। इसी समय वंदना की मम्मी, उसकी छोटी बहन को छोड़ने के लिए केन्द्र में आई। मैंने उनसे कहा कि वंदना को सुबह जल्दी भेजा करो। उन्होंने कहा कि अभी एक-दो दिन थोड़ा घर में काम था, इसलिए लेट हो जाती है। कल से जल्दी भेजती हूँ।

इसके बाद प्रमिला ने पुस्तकालय की किताबों से पक्की दोस्ती वाली कहानी हाव-भाव के साथ सुनाई। चित्रों पर चर्चा व सवाल-जवाब कर रही थी। बच्चे एक कहानी सुनने का कहने लगे तो प्रमिला ने निराशी पोषाक कहानी सुनाई। बच्चों को बहुत मज़ा आ रहा था। वंदना सवालों के जवाब अच्छे से दे रही थी।

24 जुलाई 2019

आज वंदना पूरे समय उपस्थित रही। आज 12 बच्चे उपस्थित थे। बच्चे दो समूह में बैठे थे। एक समूह को उनके स्तर के अनुसार कार्ड शीट पर लिखे सवालों को अपनी कॉपी में हल करना था। वंदना भी कार्ड पर लिखे सवालों को कॉपी में हल कर रही थी।

इसके बाद प्रमिला ने दोनों समूह में खाने वाली चीज़ों व पक्षियों से संबंधित मौखिक सवाल पूछे। बच्चे अच्छे से व सही-सही जवाब दे पा रहे थे। इसके बाद लायब्रेरी की किताब से एक कहानी हाव-भाव के साथ सुनाई और साथ-साथ सवाल-जवाब करती रही। बच्चों को मज़ा आ रहा था।

29 जुलाई 2019

आज वंदना नहीं आई थी। उसका घर दूसरे मोहल्ले में है। खेतों में बुआई होने के कारण उसे बहुत घूमकर आना होता है। इसलिए नहीं आ पा रही है।

संक्षेप में:

कुशल, गोमती और वंदना के साथ किए गए काम के इन रिकॉर्डों से आपने देखा कि तीनों बच्चों में कुछ अलग तरह की विशेषताएँ थीं।

कुशल को किसी भी काम में देर तक ध्यान लगाए रखने में दिक्कत होती है। उसका इस अति-चंचल स्वभाव के कारण उसे अक्सर घर और स्कूल में बड़ों की डाँट-मार खानी पड़ती है, उनकी उपेक्षा सहना पड़ती है। परन्तु शिक्षा प्रोत्साहन केंद्र में उसे प्यार मिला, उसकी बेचैन रचनात्मकता को प्रोत्साहन मिला, यहाँ उसके पास अलग-अलग तरह के कामों को करने की छूट थी जिसके कारण वह धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने और गणित के सवाल हल करने के कामों की तरफ भी मुड़ने लगा।

गोमती जन्म के समय से ही कमज़ोर थी, पैदा होने पर तुरन्त रोई नहीं थी - शायद उसके आन्तरिक अंगों को, मस्तिष्क को ऑक्सीजन कुछ देर से मिला होगा। फिर भी, एक अनुकूल माहौल मिलने पर वह तेज़ी से पढ़ने-लिखने और गणितीय क्षमताओं में भी विकास करने लगी। आपने देखा होगा कि डायरी के इन पन्नों से यह भी साफ उभरकर आ रहा है कि गणित के प्रति उसका लगाव कहीं ज़्यादा था। और यह भी

कि वह बहुत मिलनसार, बहुत खुलकर बातचीत करने वाली बच्ची है। केंद्र पर उसके साथ योजनाबद्ध तरीके से काम करने पर वह गणित जैसे विषय के प्रति अपना लगाव दर्शा पाई है जिससे अक्सर बच्चे कठिन मानते हैं और डरकर दूर छिटक जाते हैं।

इसी तरह वंदना भी जन्म के समय से ही शारीरिक रूप से कमज़ोर थी जिसके कारण उसके माता-पिता उसके ज़िन्दा रहने को लेकर तक सशंकित थे। वह संकोची स्वभाव की है, किसी से भी बहुत बातचीत नहीं करती, पर केंद्र पर संचालिका प्रमिला के साथ उसका एक खास रिश्ता बन पाया है। वह केंद्र आते ही अपनी कॉपी लेकर काम करने बैठ जाना पसन्द करती है। कमाल का फोकस है उसका।

यह विडम्बना ही है कि इन बच्चों को इनके घरवालों ने शरारती, ऊधमी, कमज़ोर आदि मान लिया है। और तो और, शिक्षकों ने तो इनमें से कुछ को मंदबुद्धि करार दिया।

हाँ, ये तीनों बच्चे विशेष आवश्यकता वाले हैं। परन्तु थोड़ा सा व्यक्तिगत ध्यान और योजनाबद्ध तरीके से स्तर-अनुरुप काम दिए जाने पर वे न सिर्फ सीखने में प्रगति कर पा रहे हैं, बल्कि अपनी रचनात्मकता, व्यक्तिगत विशेषताओं और खास रुचियों की अभिव्यक्ति और उन्हें अनुभव कर पा रहे हैं।

उपसंहार

इस पूरे अनुभव से हम शिक्षकों के लिए कुछ बातें सहज ही उभरकर आती हैं। उन्हें हम यहाँ सूचीबद्ध कर रहे हैं।

- अपने विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को जानना, परिवार की स्थिति, बच्चे का बारे में परिवार के सदस्यों की राय, उनके प्रति व्यवहार आदि को जानना हर शिक्षक के लिए बहुत ज़रूरी है। उसके बगैर हमारा अपने विद्यार्थी के साथ मज़बूत रिश्ता बनाना मुश्किल ही होता है। इसमें समय लगता है, परिवार के सदस्यों से बार-बार मिलना पड़ता है, पर इसका बच्चों के साथ हमारे काम में बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- कक्षा में सीखने में बाधाएँ महसूस करने वाले बच्चों, विशेष बच्चों, अधिगम अक्षमता वाले बच्चों के बारे में परिवार से जानकारी जुटाते समय उनकी सेहत, उनके जन्म के समय की घटनाओं को जानना बहुत ज़रूरी है। प्रसव-पूर्व और प्रसव के समय की घटनाओं से कई बार बच्चे की विशेष स्थिति के सुराग मिल सकते हैं।
- कक्षा में और कक्षा के अलावा के समय में बच्चों के साथ भी बातचीत करना निहायत ही मददगार होता है शिक्षक और बच्चे के बीच एक सहज सम्बन्ध के कायम करने में। इस बातचीत से ही कई बार हमें बच्चे की मनस्थिति, उसकी पसन्द-नापसन्द आदि का पता लग पाता है।
- उपरोक्त बातचीत में शिक्षक को अपने बारे में बताने की भी तैयारी होती है। बच्चों के मन में अक्सर अपने शिक्षक के बारे में, उसके घर-परिवार, उसके जीवन के बारे में जानने की बहुत उत्सुकता होती है। आपने गोमती के सवालों में देखा कि वह अनिल के बारे में जानने को कितनी उत्सुक है। तो शिक्षक अगर केवल सवाल पूछे और अपने बारे में न बताए, तो यह रिश्ता एकतरफा होता है। इसे दुतरफा और बराबरी वाला बनाने के लिए शिक्षक को भी अपने बारे में बताने की तैयारी बनानी होगी।
- इन केस स्टडी में शुरु में ही आपने देखा कि बच्चे की उपस्थिति को खास महत्व दिया गया है। साथ ही अगर बच्चा अनुपस्थित हो, तो उसका कारण जानना भी शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण है। ताकि वह उसकी उपस्थिति को नियमित बनाने के प्रयास कर सके।
- कक्षा में किसी काम को करवाते समय निर्देशों का स्पष्ट होना कितना महत्वपूर्ण है - यह भी गोमती और वंदना की केस स्टडी से उभरता है। साथ ही यह भी कि मननशील शिक्षक अपनी गलतियों पर विचार करके उनमें सुधार करने की किस तरह से कोशिश कर सकते हैं।
- इस तरह के काम में स्कूल और शिक्षकों के साथ भी एक सकारात्मक और सहयोगात्मक संवाद बनाना बहुत मददगार होता है - इसकी झलकियाँ भी आप तीनों केस स्टडी में देख पाए होंगे।

इस सूची का कोई क्रम नहीं है - हर बात अपने आप में महत्वपूर्ण है। एक शिक्षक होने के नाते हमें खुद ही यह तय करना होता है कि किस बात को कब काम में लाया जाए।

इसके अलावा, विशेष बच्चों के साथ काम करने में कुछ बातें यहाँ प्रमुखता से उभरकर आती हैं - और ये बातें किसी भी बच्चे के साथ संज्ञानात्मक काम में मददगार साबित हो सकती हैं -

- शिक्षक का बच्चों के साथ भावनात्मक जुड़ाव बनाना।
- बच्चों के साथ हर दिन कुछ समय व्यक्तिगत काम करना - भले ही 15-20 मिनट ही सही।
- बच्चों को काम करते हुए देखना, बारीक अवलोकन करना, कहाँ दिक्कत आ रही है - उन बिन्दुओं को पहचानना और उन पर बार-बार, अलग-अलग तरीके से काम करना।
- सीखने के जिन प्रतिफलों पर बच्चों के साथ काम कर रहे हैं, उनको छोटे-छोटे लक्ष्यों में बाँटना और फिर छोटे-छोटे कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ना।
- जब भी आप किसी नए संज्ञानात्मक क्षेत्र में या नई अवधारणा पर काम कर रहे हैं, तो बच्चों को काम देकर

जहाँ ज़रूरत पड़े वहाँ मदद करना। गलती हो जाए तो झिड़की या डाँट नहीं, मदद करना अधिक कारगर होता है।

उपरोक्त सभी बातों के उदाहरण आपको भाषा और गणित - दोनों ही विषयों के संदर्भ में - तीनों केस स्टडी में देखने को मिले हैं। हम उम्मीद करते हैं कि इस लेख को पढ़ने वाले शिक्षक अपने-अपने संदर्भ में इनका उपयोग करेंगे। आपके अनुभव और फीडबैक हमें अपने काम को और परिष्कृत करने में मदद करेंगे।